नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
YouTube

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 361, नई दिल्ली, रविवार 01 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

क्त की कदर करो, क्योंकि एक बार गया हुआ वक्त लौटकर नहीं आता।

03 भगवान शंकर के रहस्य
06 सूर्य का प्रकाश नहीं, प्रकाश संश्लेषण नहीं – तो फिर गहरा समुद्र...
08 संगम विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों का रणथंभौर, में शैक्षणिक भौगोलिक भ्रमण

परिवहन विशेष
parivahanvishesh

आरएनआई द्वारा दो भाषाओं में अनुमोदित, प्रकाशित समाचार पत्र

"परिवहन विशेष" वार्षिक समारोह

दिनांक:- 29 मार्च
स्थान:- मावलंकर हाल, कांस्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया
समय:- 1 बजे से 5 बजे

परिवहन विशेष
हिन्दी एवं इंग्लिश भाषा दैनिक समाचार पत्र आपको अपने तृतीय वार्षिक समारोह में सम्मान पूर्वक शामिल होने के लिए निमंत्रित करता है

इस वर्ष का वार्षिक समारोह मुख्य रूप से "सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा" को समर्पित है।

मुख्य विशेषता

1. विशेषज्ञों द्वारा जानने का प्रयास की भारत सरकार द्वारा देश में सख्त कानून लागू करने के बाद भी बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं और सड़को पर उपलब्ध जाम का मुख्य कारण और उससे छुटकारा पाने के लिए क्या नीतियां अनिवार्य,
2. सुप्रीम कोर्ट आफ इंडिया, एनजीटी, वायु गुणवत्ता आयोग एवं सरकारों द्वारा नए नए दिशा निर्देशों, आदेशों के बाद भी प्रदूषण नियंत्रण होने के स्थान पर बढ़ता जा रहा है उससे निजात पाने के लिए जाएंगे इस समारोह में विशेषज्ञों से उनके विचार
3. डिजिटल इंडिया की तरफ बढ़ते भारत में बढ़ते साइबर क्राइम से कैसे बचा जा सकता है इसपर पूर्ण चर्चा एवम् विशेषज्ञों की राय
4. भारत दश में नए कानूनों के बावजूद महिलाओं पर अत्याचार और गुमशुदगी पर गहन चिंतन और विशेषज्ञों के विचार

इस समारोह में भारत देश के ज्वलंतशील मुद्दों पर जानकारी प्राप्त कर समाचार पत्रों द्वारा जनहित में जनता को सचेत करने और उससे जनता की सुरक्षा संभव के लिए *"परिवहन विशेष" " समर्पित एवं पूर्ण रूप से प्रयासरत रहेगा। इस उद्देश्य को मद्देनजर रखते हुए इस वर्ष का वार्षिक समारोह ज्वलंतशील मुद्दों को समर्पित किया गया है। इस समारोह में भारत देश से विशेषज्ञों के साथ - साथ हमारा प्रयास भारत सरकार के माननीय गणमान्य कैबिनेट एवं राज्य स्तरीय मंत्रियों की गरिमा पूर्ण उपस्थिति और उनके विचार जनहित में मुख्य बिंदुओं में रहेगा।

इस समारोह में भारत देश में जनहित में इन कार्यों को करने में पूर्ण निष्ठा से सलग्न "सामाजिक कार्यकर्ताओं और कार्यरत समूहों (एनजीओ, ट्रस्ट एवं एसोसिएशन) को पुरस्कार" देकर सम्मानित किया जाएगा।

आपकी उपस्थिति हमारा गर्व

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) - वैष्णवी फाउंडेशन एवं द्वारका स्थित मैक्स सुपर हॉस्पिटल के सौजन्य से

-"पूर्णता नि:शुल्क, कोई रजिस्ट्रेशन फीस नहीं, स्वास्थ्य जाँच शिविर
" आपकी तंदुरुस्ती हमारा ध्येय",
टोलवा ट्रस्ट द्वारा आयोजित पूर्णतः निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर

* वैष्णवी फाउंडेशन के सहयोग द्वारा
1. आंखों की जांच, 2. रक्तचाप, 3. मधुमेह जांच, 4. मोतियाबिंद सर्जरी के साथ-साथ 5. भारतीय लेंस की सुविधा
* द्वारका स्थित मैक्स सुपर हॉस्पिटल के सहयोग द्वारा
6. बीपी, 7. शुगर, 8. कोलेस्ट्रॉल, 9. हड्डियों का घनत्व,
इस जांच शिविर मे ऊपरलिखित सभी जांच पूरी तरह से नि:शुल्क प्रदान की जाएगी।
इस जांच शिविर में निम्नलिखित अनुभवी एवं विशेषज्ञ डॉक्टर्स एवम् अन्य की निगरानी में जांच,

वैष्णवी फाउंडेशन
1. डॉ मनोज कुमार दुबे,
2. रिशु भारद्वाज, एवं
3. विकास राय द्वारका स्थित मैक्स सुपर हॉस्पिटल चिकित्सक
4. जगदीश

जांच शिविर : दिनांक: 15 मार्च (रविवार) 2026
स्थान: गुरुद्वारा सिंह सभा, शहीद भगत सिंह कॉलोनी, शिवाजी एन्क्लेव, दिल्ली 110027।
समय: 10:00 AM to 02:00 PM

आप सभी से विनम्र निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में समय पर पधारें तथा अपने सगे-संबंधियों और मित्रों को भी साथ लेकर आएँ और इस अवसर का लाभ उठाएँ।

विशेष जानकारी मोतियाबिंद सर्जरी के साथ-साथ भारतीय लेंस की सुविधा के लिए मरीज को अपने खर्चे पर * बालाजी हॉस्पिटल * लायन्स हॉस्पिटल पहुंचना पड़ेगा, पर सर्जरी और भारतीय लेंस निशुल्क रहेगा।

स्वस्थ रहें, जागरूक रहें। आपकी सेहत – हमारी प्राथमिकता।

निवेदक :-
संजय कुमार बाठला, राष्ट्रीय अध्यक्ष
पिंकी कुंडू, महासचिव
केके छाबड़ा उपाध्यक्ष
सुनीता शर्मा सचिव
अभिषेक राजपूत सचिव

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार: व्हाट्सऐप और अन्य मैसेजिंग ऐप्स का सुरक्षित उपयोग ही सिम बाइंडिंग का सार है

पिंकी कुंडू

– अनुपालन की अंतिम तिथि: 28 फरवरी 2026

– कार्यान्वयन की तिथि: 1 मार्च 2026 से नियम प्रभावी होंगे।

-इसके तहत:

- ऐप केवल उसी स्मार्टफ़ोन पर चलेगा जिसमें पंजीकृत सिम कार्ड मौजूद हो।

- वेब-आधारित सेवाओं (जैसे WhatsApp Web) से उपयोगकर्ता हर छह घंटे में स्वतः लॉगआउट होंगे।

- यह कदम फ़िशिंग, डिजिटल गिरफ्तारी, प्रतिरूपण और निवेश धोखाधड़ी जैसे साइबर अपराधों को रोकने के लिए उठाया गया है।

तत्काल लाभ:

- जागरूकता से फ़िशिंग और धोखाधड़ी का जोखिम कम होगा।

- नागरिक तुरंत संदिग्ध गतिविधि को ब्लॉक/रिपोर्ट कर सकेंगे।

दीर्घकालिक लाभ:

- सतर्क डिजिटल संचार की संस्कृति का निर्माण।

- साइबर धोखाधड़ी के विरुद्ध संस्थागत लचीलापन मजबूत होगा।

- व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा और वित्तीय हानि की रोकथाम।

मूल जोखिम की पहचान

– मैसेजिंग ऐप्स व्यक्तिगत और पेशेवर संचार के लिए व्यापक रूप से उपयोग किए जाते हैं।

– जोखिमों में फ़िशिंग लिंक, नकली नौकरी ऑफ़र, मैलवेयर अटैचमेंट, प्रतिरूपण (Impersonation), और डेटा चोरी शामिल हैं।

– स्वर्ण नियम: "भरोसा करने से पहले सत्यापित करें, और साझा करने से पहले सुरक्षित करें।"

– हमेशा अज्ञात संपर्कों की पुष्टि करें, संदिग्ध लिंक पर क्लिक करने से बचें, और दो-स्तरीय सत्यापन सक्षम करें।

उपयोगकर्ताओं के लिए चरणबद्ध मार्गदर्शिका

1. नियमित अपडेट करें – व्हाट्सऐप और समान ऐप्स को केवल आधिकारिक स्टोर्स से अपडेट रखें।

2. सुरक्षा सेटिंग्स सक्षम करें – दो-स्तरीय सत्यापन और बायोमेट्रिक लॉक सक्रिय करें।

3. लिंक पर क्लिक करने से पहले जाँचें – लिंक को होवर या प्रीव्यू करें; अजनबियों से आए शॉर्ट URL से बचें।

4. फॉरवर्डेड संदेशों से सावधान रहें – सामूहिक फॉरवर्ड को सतर्कता से लें; विश्वसनीय स्रोतों से सत्यापित करें।

5. संवेदनशील जानकारी सीमित करें – व्यक्तिगत आईडी, वित्तीय विवरण या पासवर्ड साझा करने से बचें।

6. रिपोर्ट और ब्लॉक करें – संदिग्ध खातों को ब्लॉक करने और स्पैम रिपोर्ट करने के लिए इन-ऐप टूल्स का उपयोग करें।

संस्थागत दृष्टिकोण

– अधिकारी और नागरिक केवल सत्यापित होने पर ही व्हाट्सऐप समूहों को आधिकारिक संचार चैनल मानें।

– धोखाधड़ी के प्रयासों की रिपोर्ट NCRP (National Cyber Crime Reporting Portal) पर करने के लिए प्रोत्साहित करें।

संदेश "व्हाट्सऐप जुड़ने के लिए है, समझौता करने के लिए नहीं।

अपडेट करें, सत्यापित करें और सुरक्षित करें—क्योंकि एक लापरवाह क्लिक आपकी गोपनीयता की कीमत बन सकता है।"

पैर को लगने वाली चोट ,संभल कर चलना सिखाती है और आत्मा को लगने वाली चोट , समझदारी से जीना सिखाती है

केके छाबड़ा

लोग सारी जिंदगी आपस में लड़ने में गुजार देते हैं। एक दूसरे को नीचा दिखाने में निकाल देते हैं और कभी आपस में दो मीठे बोल नहीं बोलते, लेकिन लोग यह भूल जाते हैं, जो ईश्वर आपके दिल में रहते हैं, वही ईश्वर सामने वाले के दिल में भी रहते हैं। इससे बड़ा पाप कर्म क्या होगा, आप दूसरों को दुख देकर खुद सुखी और खुश रहने की कामना करते हैं। यह कभी नहीं हो सकता, क्योंकि आपको बदले में वही सब कुछ मिलता है जो आप दूसरों को देते हैं।

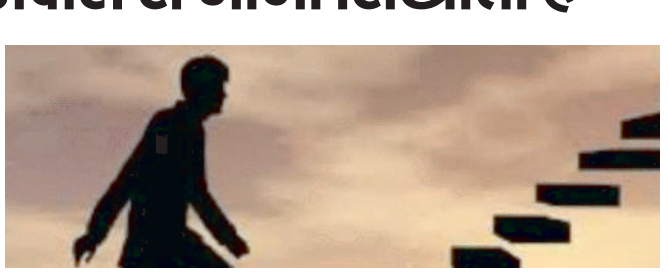

क्योंकि गीता में भी एक सीधा साधा संदेश है कि जैसे कर्म करोगे वैसा ही फल आपको मिलेगा।

दूसरे को दुख देने के बाद, आप ऐसा सोच भी कैसे सकते हैं आप सुख से और चैन से रह सकते हैं। यह तो आप ही फैसला करते हैं, आप कर्म कैसे करेंगे और आपका आने वाला जीवन कैसा होगा।

इसमें भगवान का कोई योगदान नहीं होता, यही सच्चाई है।

जय माता दी

गलतियों से मिली शिक्षा का नाम ही है तजुर्बा

केके छाबड़ा

गलतियां तो सबसे होती हैं, ऐसा कोई नहीं है जिससे जीवन में कोई गलती ना हुई हो।

आप उन गलतियों से ही सीखते है और गलतियों से मिली शिक्षा का दूसरा नाम ही तजुर्बा है। जो इंसान गलती करने के बाद उस गलती को मान ले उससे बड़ा कोई इंसान नहीं होता।

लेकिन देखने में आता है कि लोग गलतियां करने के बाद भी, अपनी गलती नहीं मानते बल्कि उस पर पर्दा डालने के लिए झूठ पर झूठ बोलते चले जाते हैं।

लेकिन फिर भी वह अपने झूठ को सच में तब्दील नहीं कर पाते, क्योंकि सच को याद रखने की जरूरत नहीं होती। सच तो हमेशा अमर रहता है और झूठ हमेशा झूठ ही रहेगा क्योंकि झूठ को हमेशा याद रखना पड़ता है कि मैंने पहले क्या कहा था। अब कहीं मेरी बात ना बदल जाए लेकिन फिर भी कोई ना कोई गलती इंसान कर बैठता है और उसका झूठ पकड़ा जाता है।

इससे बेहतर यह है कि सच की राह पर चलें और कभी भी किसी का दिल दुखाने की कोशिश ना करें। बाकी आपकी मर्जी, आप क्या करना चाहते हैं। **जय माता दी।**

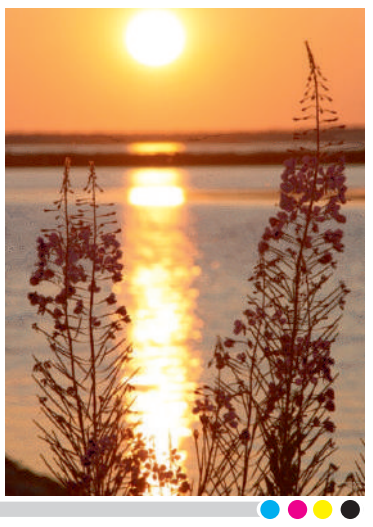

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

चूना और उससे होने वाले फायदे

संजय कुमार बाठला

आजकल लोग चूना खाने की जगह चूना लगाने की फिराक में रहते हैं और उसी तरफ़ अपना दिमाग लगाते हैं पर अगर चूना खाने के फायदे पता हो तो उम्मीद है लोग चूना खाना ज्यादा पसंद करने लगेगे, आइए जानते हैं चूने के कुछ फायदे

चूना जो पान में लगा के खाया जाता है , उसके गेहूं के बराबर छोटे छोटे टुकड़े करके घर की रसोई में रखे .यह सत्तर प्रकार की बीमारियों को ठीक कर देता है .

1. गेहूँ के दाने के बराबर चूना गन्ने के रस में मिलाकर पिलाने से बहुत जल्दी पीलिया ठीक हो जाता है।

2. शुगर मरीज द्वारा रोज़ सुबह ख़ाली पेट एक गिलास पानी में एक छोटे चने के बराबर चुना मिलाकर पीने से शुगर जड़ से ख़त्म हो सकती हैं (समय समय पर जाँच करवाते रहे.. वरना शुगर का लेवल माइनस भी हो सकता हैं)

3. जब कोई माँ गर्भावस्था में है तो गेहूं के बराबर चूना रोज खाना चाहिए क्योंकि गर्भवती माँ को सबसे ज्यादा केल्शियम की जरुरत होती है और चूना केल्शियम का सबसे बड़ा भंडार है

4. चूना घुटने के दर्द ठीक करता है , कमर का दर्द ठीक करता है , कंधे का दर्द ठीक करता है, एक खतरनाक बीमारी है Spondylitis वो चुने से ठीक होता है . कई बार

5. हमारे रीढ़ की हड्डी में जो मनके होते है उसमे दूरी बढ़ जाती है गैप आ जाता है जिसे यह चूना ही ठीक करता है . रीढ़ की हड्डी की सब बीमारिया चूने से ठीक होती है .

6. अगर हड्डी टूट जाये तो टूटी हुई हड्डी को जोड़ने की ताकत सबसे ज्यादा चूने में है . इसके लिए गेहूं के बराबर चूने का सेवन सुबह खाली पेट कर सकते है.

7. अगर मुंह में ठंडा गरम पानी लगता है तो चूना खाने से बिलकुल ठीक हो जाता है ,

8. मुंह में अगर छाले हो गए है तो चूने के पानी से कुल्ला करने पर तुरन्त ठीक हो जाता है ।

9. शरीर में जब खून कम हो जाये तो चूना जरुर लेना चाहिए। एनीमिया खून की कमी है उसकी सबसे अच्छी दवा है ये चूना . गन्ने के रस में या संतरे के रस में, नही तो सबसे अच्छा है अनार के रस में डाल कर चूना ले. अनार के रस में चूना पिने से खून बहुत बढता है, बहुत जल्दी खून बनता है - एक कप अनार का रस और गेहूँ के दाने के बराबर चूना डालकर सुबह खाली पेट ले सकते है.

भारत के जो लोग चूने से पान खाते है, बहुत होशियार है और वे महर्षि वाग्भट के अनुयायी है .

* पान बिना तम्बाखू , सुपारी और कत्थे के ले।
* तम्बाखू ज़हर है और चूना अमृत है।
* कत्था केंसर का कारण बनता है, पान सौंठ, इलायची, लौंग, केसर, सौंफ, गुलकंद, चूना, कसा हुआ नारियल आदि डाल कर ही खाए

अगर घुटने में घिसाव आ गया हो और डॉक्टर कहे के घुटना बदल दो तो भी जरुरत नही चूना खाते रहिये और हरसिंगार (पारिजातक या प्राजक्ता) के पत्ते का काढ़ा पीजिये , घुटने बहुत अच्छे काम करेंगे।

चूना खाइए पर चूना लगाइए मत क्योंकि चूना लगाने के लिए नही खाने के लिए बना है.

दिल सिर्फ़ एक पंप नहीं रिस्पॉन्सिव, एडजस्ट होने वाली मसल है

दिल सिर्फ़ एक पंप नहीं है। यह एक रिस्पॉन्सिव, एडजस्ट होने वाली मसल है जो सही कंडीशन मिलने पर बेहतर हो सकती है। रिसर्चर्स ने देखा है कि रात में कुछ आसान फिजिकल आदतें दिल के नेचुरल रिपेयर और रिकवरी प्रोसेस में मदद कर सकती हैं, जिससे कार्डियोलॉजिस्ट भी हैरान हैं।

सोने से पहले आप जो सबसे असरदार काम कर सकते हैं, वह है हल्की, रेगुलर फिजिकल एक्टिविटी करना, जैसे शाम को 10 से 20 मिनट की वॉक। डिनर के बाद हल्की मूवमेंट ब्लड शुगर को रेगुलेट करने, ब्लड प्रेशर कम करने और सर्कुलेशन को बेहतर बनाने में मदद करती है। नींद के दौरान, शरीर रिकवरी मोड में चला जाता है। जब सोने से पहले ब्लड प्रेशर और हार्ट रेट को बेहतर तरीके से कंट्रोल किया जाता है, तो कार्डियोवैस्कुलर सिस्टम पर रात भर कम दबाव पड़ता है। समय के साथ, यह दिल के काम करने के तरीके और वैस्कुलर फ्लेक्सिबिलिटी को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है।

साइंटिफिकली, हल्की फिजिकल एक्टिविटी नाइट्रिक ऑक्साइड प्रोडक्शन को बढ़ाती है, एंडोथेलियल फंक्शन को बेहतर बनाती है और सूजन को कम करती है। यह सिम्पैथेटिक ओवरड्राइव को कम करके और पैरासिम्पैथेटिक एक्टिविटी को बढ़ाकर ऑटोनोमिक नर्वस सिस्टम को बैलेंस करने में भी मदद करती है। बेहतर नींद की क्वालिटी दिल के रिपेयर प्रोसेस, हार्मोन बैलेंस और ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस को कम करने में और मदद करती है। कार्डियोलॉजिस्ट अक्सर इस बात पर ज़ोर देते हैं कि एक जैसी लाइफस्टाइल की आदतों का दिल की सेहत पर लंबे समय तक असर देखा जा सकता है।

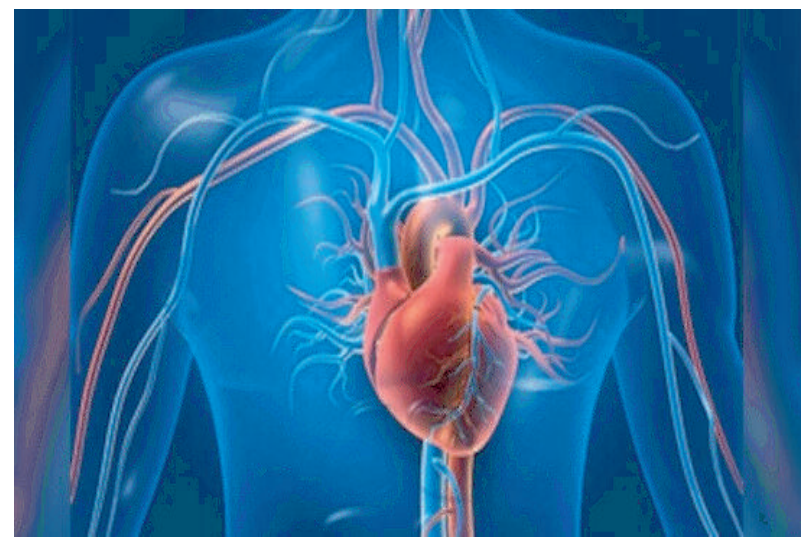

इसका प्रैक्टिकल तरीका आसान और सुरक्षित है। अपने रात के रूटीन में हल्की-फुल्की एक्टिविटी शामिल करें, सोने से ठीक पहले ज़्यादा मेहनत वाले वर्कआउट से बचें, और अच्छी नींद को प्राथमिकता दें। जिन लोगों को पहले से दिल की कोई बीमारी है, उन्हें नया रूटीन शुरू करने से पहले किसी हेल्थकेयर प्रोफेशनल से सलाह लेनी चाहिए।

दिल में ज़बरदस्त लचीलापन होता है। छोटी-छोटी, एक जैसी आदतों से, आप ऐसे हालात बनाते हैं जो इसे मज़बूती से काम करने और समय के साथ बेहतर तरीके से ठीक होने में मदद करते हैं।

बहुत से लोगों को आज भी कोल्ड ड्रिंक और अल्ट्रा-प्रोसेस्ड स्नैक्स के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव के बारे में जानकारी नहीं है।

खासकर ग्रामीण और मध्यम-आय वाली महिलाओं-पुरुषों और कुछ तथाकथित शिक्षित और शहरों में रहनेवाले लोगों मे पोषण संबंधी सही जागरूकता की कमी स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

असल में कई लोग यह भी नहीं समझते कि "कोल्ड ड्रिंक" और "फ्रूट जूस" में अंतर क्या होता है और शरीर पर उनके प्रभाव कैसे भिन्न होते हैं।

एक कथित 45 वर्षीय महिला को स्तन कैंसर (Breast Cancer) के पहले चरण (First Stage) का निदान हुआ था। अस्पताल से उन्हें एक विस्तृत पैम्फलेट दिया गया था, जिसमें जीवनशैली से जुड़ी महत्वपूर्ण सलाह शामिल थी — जैसे कि भोजन (Diet), दवाइयाँ (Medications), स्वच्छता (Hygiene), व्यायाम (Exercise), नींद (Sleep) आदि।

उस पैंफलेट में सबसे प्रथम और स्पष्ट बात यह लिखी थी कि शुगर (Sugar) का सेवन अत्यंत कम करना है।

चीनी की अधिकता और अत्यधिक मीठी चीजों का सेवन कई स्वास्थ्य समस्याओं से जुड़ा है, जिनमें:

वजन बढ़ना
इन्सुलिन प्रतिरोध
सूजन (Inflammation)
कैंसर से संभावित जोखिम में वृद्धि

आधुनिक शोध के अनुसार अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड्स — जिसमें कोल्ड ड्रिंक्स, फ्लेवर्ड ड्रिंक्स, मीठे शेक, पॅकेज्ड स्नैक्स आदि शामिल हैं — में ज्यादा चीनी, संरक्षक (Preservatives), रंग और फ्लेवरिंग एजेंट होते हैं। ये शरीर में ऑक्सीडेटिव तनाव और सूजन-जनित प्रक्रिया को बढ़ाते हैं, जो दीर्घकालिक रूप से बीमारी के जोखिम को बढ़ा सकते हैं।

फिर भी, वह महिला हर रोज़ कोल्ड ड्रिंक पीती थी। उसने उस कोल्ड ड्रिंक के पैक पर लगे फल के चित्र को देखकर यह

मान लिया था कि यह पेय 100% प्राकृतिक फल का रस है। यानी उसने ब्रांडिंग और मार्केटिंग की चालाकी को स्वास्थ्य संबंधी सच समझ लिया।

लेकिन वास्तविकता यह है:

कोल्ड ड्रिंक्स और पैकेज्ड "फल-स्वादित" पेयों में अक्सर:

प्राकृतिक रस होता ही नहीं है,
शेष में बहुत अधिक चीनी, ग्लूकोज़-फ्रुक्टोज सिरप,
कृत्रिम फ्लेवर और संरक्षक,
और नगण्य पोषक तत्व होते हैं।

ऐसे में यह जानना जरूरी है कि:

1. प्राकृतिक फल का रस और कोल्ड ड्रिंक दो अलग-अलग चीजें हैं।
2. फल के पैक पर चित्र या "फ्लेवर्ड" शब्द सच्चाई नहीं होते।
3. पैकेजिंग पर लिखा "फलों का स्वाद" मतलब फलों से नहीं बनाया गया — यह बस बाजार रणनीति है।

वैज्ञानिक दृष्टि से आज की समझ

अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड्स (UPFs) का नियमित सेवन स्वास्थ्य के लिए जोखिम-भरा माना जाता है।

1. अल्प-घटक पोषण,
2. ब्लड शुगर पर तीव्र प्रभाव,
3. सूजन और वजन बढ़ोतरी से जुड़ा है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) और कई पोषण संस्थाओं के निर्देश हैं कि:

1. अतिरिक्त शर्करा का सेवन सीमित होना चाहिए।
2. प्राकृतिक, कम-प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थों को प्राथमिकता देनी चाहिए।
3. ताजे फल, सब्जियाँ, साबुत अनाज, प्रोटीन और पर्याप्त पानी दिनचर्या में शामिल करना चाहिए।

कैंसर जैसे गंभीर स्वास्थ्य मामलों में जीवनशैली में सुधार (Lifestyle Modification) का योगदान महत्वपूर्ण पाया गया है — ना कि केवल दवाइयाँ लेने से।

निष्कर्ष वर्तमान समय में सही जानकारी की कमी, ब्रांड मार्केटिंग के प्रभाव और गलत धारणाओं के कारण बहुत से लोग स्वास्थ्य नियमों का पालन नहीं कर पाते।

उदाहरण में दी गयी महिला भी इस भ्रम का शिकार थी कि "फल के चित्र = स्वास्थ्यवर्धक पेय।" जबकि वास्तविकता इसके विपरीत थी।

यदि हम सच में स्वास्थ्य सुधारना चाहते हैं, तो हमें:

1. प्राकृतिक और संतुलित भोजन अपनाना होगा,
2. प्रोसेस्ड शर्करा से दूरी बनानी होगी,
3. सही जानकारी पर आधारित

मायलोमा (Multiple Myeloma) क्या है?

मायलोमा (Multiple Myeloma) एक प्रकार का रक्त कैंसर है, जो अस्थि-मज्जा (Bone Marrow) में बनने वाली प्लाज़्मा कोशिकाओं में विकसित होता है।

अस्थि-मज्जा हड्डियों के अंदर पाया जाने वाला मुलायम ऊतक है जहाँ रक्त कोशिकाएँ बनती हैं।

सामान्य स्थिति में क्या होता है? स्वस्थ प्लाज़्मा कोशिकाएँ एंटीबॉडी (प्रतिरक्षा प्रोटीन) बनाती हैं जो शरीर को संक्रमण से बचाती हैं।

मायलोमा में क्या होता है?

1. प्लाज़्मा कोशिकाएँ कैंसरग्रस्त होकर अनियंत्रित रूप से बढ़ने लगती हैं।
2. वे सामान्य रक्त कोशिकाओं को दबा देती हैं।
3. वे बड़ी मात्रा में एक असामान्य प्रोटीन बनाती हैं जिसे M-protein (मोनोक्लोनल प्रोटीन) कहते हैं।

यह शरीर में कई जटिल समस्याएँ पैदा करता है।

मायलोमा के प्रभाव

1. हड्डियों पर प्रभाव
1. हड्डियों में दर्द (विशेषकर रीढ़, पसलियाँ, कूल्हे)
2. बार-बार फ्रैक्चर
3. हड्डियों में छेद जैसे घाव
2. रक्त संबंधी समस्या एनीमिया (खून की कमी) → थकान, कमजोरी
3. किडनी पर असर
1. M-protein किडनी को नुकसान पहुँचा सकता है
2. प्यास अधिक लगना, पेशाब ज्यादा आना, मतली
4. रक्त में कैल्शियम बढ़ना भ्रम, कब्ज, भूख कम लगना
5. संक्रमण का खतरा प्रतिरक्षा कमज़ोर होने से बार-बार संक्रमण

"मल्टीपल" क्यों कहा जाता है? अक्सर यह बीमारी हड्डियों के कई स्थानों पर एक साथ होती है, इसलिए इसे मल्टीपल मायलोमा कहा जाता है।

यदि केवल एक ही स्थान पर ट्यूमर हो, तो उसे Solitary Plasmacytoma कहते हैं।

यह बीमारी कैसे विकसित होती है? अधिकांश मामलों में यह दो प्रारंभिक अवस्थाओं से विकसित होती है:

1. MGUS (Monoclonal Gammopathy of Undetermined Significance)
1. बहुत हल्की अवस्था
2. हर वर्ष लगभग 1% जोखिम कि यह मायलोमा में बदले
2. Smoldering Multiple Myeloma (SMM)
1. अधिक जोखिम वाली अवस्था
2. अब उच्च जोखिम वाले मामलों में उपचार शुरू किया जा सकता है

जोखिम कारक उम्र अधिक (अधिकांश रोगी 65–70 वर्ष) पुरुष

* अफ्रीकी मूल के लोगों में अधिक सामान्य
* परिवार में इतिहास
* MGUS या SMM होना

जाँच कैसे होती है?

1. रक्त परीक्षण (M-protein, Free Light Chains)
2. मूत्र परीक्षण
3. बोन मैरो बायोप्सी
4. PET-CT, MRI
5. जेनेटिक परीक्षण
6. स्टेजिंग के लिए R-ISS सिस्टम

2025–2026 की नई और क्रांतिकारी प्रगति पिछले 2–3 वर्षों में मायलोमा उपचार में अभूतपूर्व प्रगति हुई है।

1. अब 5-वर्ष जीवित रहने की दर लगभग 62% है
2. कई मरीज 10 वर्ष या उससे अधिक अच्छे जीवन के साथ जी रहे हैं।

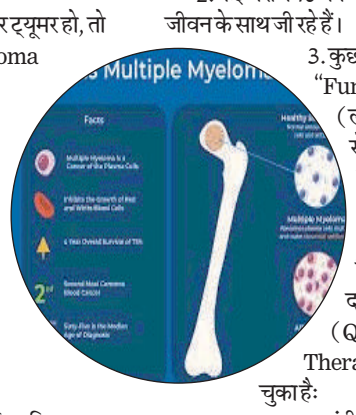

3. कुछ मामलों में "Functional Cure" (लंबे समय तक गहरी रोगमुक्ति) संभव हो रही है।

1. प्रारंभिक (नए) मरीजों के लिए उपचार अब चार दवाओं का संयोजन (Quadruplet Therapy) मानक बन चुका है:

1. Anti-CD38 एंटीबॉडी (जैसे Daratumumab)
2. Bortezomib
3. Lenalidomide
4. Dexamethasone

जनवरी 2026 अपडेट Darzalex Faspro (Subcutaneous Daratumumab) को उन मरीजों के लिए स्वीकृति मिली जो स्टेम सेल ट्रांसप्लांट के लिए योग्य नहीं हैं।

इससे रोग नियंत्रण अधिक गहरा और लंबा हुआ है।

नवंबर 2025 उच्च-जोखिम SMM में पहली बार Darzalex Faspro को स्वीकृति — इससे बीमारी को आगे बढ़ने से रोका जा सकता है।

2. Relapsed / Refractory (बार-बार लौटने वाला रोग)

1. CAR-T सेल थेरेपी (BCMA टार्गेटेड)
2. Cilta-cel
3. Ide-cel

2025 डेटा: लगभग 1/3 मरीज 5 वर्ष बाद भी कैंसर-मुक्त रहे।

Bispecific Antibodies (तुरंत उपलब्ध इम्यून थेरेपी)

1. Teclistamab
2. Elranatamab
3. Linvoseltamab
4. Talquetamab

ASH 2025 ट्रायल:

* Teclistamab + Daratumumab संयोजन से 3-वर्ष रोग-मुक्ति दर 83% तक पहुँची।
* Antibody-Drug Conjugate
* 2025 में Belantamab Mafodotin संयोजन को स्वीकृति।

3. अन्य महत्वपूर्ण प्रगति

* MRD (Minimal Residual Disease) टेस्टिंग अब FDA द्वारा मान्य इससे व्यक्तिगत उपचार योजना संभव
* Maintenance Therapy
* Daratumumab + Lenalidomide से लंबे समय तक रोग नियंत्रण
* कुछ मरीजों में गहरी प्रतिक्रिया मिलने पर स्टेम सेल ट्रांसप्लांट टाला भी जा सकता है।

भविष्य की दिशा (2026 और आगे)

"Off-the-shelf" CAR-T
Multi-target थेरेपी (BCMA + GPRC5D)
Trispecific antibodies
जीन आधारित व्यक्तिगत उपचार

निष्कर्ष मायलोमा पहले एक गंभीर और तेजी से बढ़ने वाली बीमारी मानी जाती थी। आज यह कई मरीजों में दीर्घकालिक नियंत्रित या लगभग ठीक होने योग्य रोग बन रही है।

1. विशेषज्ञ हेमेटोलॉजिस्ट से इलाज कराना अत्यंत आवश्यक है
2. क्लिनिकल ट्रायल्स नए अवसर प्रदान कर रहे हैं
3. सही समय पर जांच और आधुनिक उपचार से जीवन की गुणवत्ता बेहतर रहती है।

बरगद के दूध का फायदा

संजय कुमार बाठला

आयुर्वेद में इसे कमजोरी और थकान में उपयोगी माना जाता है, लेकिन यह मिठाई नहीं है।

उपयोग एक छोटे बतासे पर 2–3 बूंद हफ्ते में 1–2 बार।

बरगद के दूध यानी बरगद के पेड़ से निकलने वाले सफेद लेटेक्स को लेकर पारंपरिक घरेलू नुस्खों में कहा जाता है कि इसे बतासे के साथ एक-एक बूंद बढ़ाते हुए और फिर घटाते हुए 21 दिनों तक लेने से प्रमेह, स्वप्नदोष जैसी समस्याओं में लाभ मिलता है, वीर्य की गुणवत्ता सुधरती है और शुक्राणुओं की संख्या बढ़ती है।

आयुर्वेदिक मान्यताओं के अनुसार बरगद का दूध संकोचक (astringent) और पुष्टिकारक माना जाता है, जो धातु को मजबूत करने और शरीर की कमजोरी दूर करने में सहायक बताया जाता है।

हालांकि, यह ध्यान रखना बेहद जरूरी है कि बरगद का लेटेक्स एक प्रकार का कच्चा पौधीय रस होता है, जो गलत मात्रा में लेने पर एलर्जी, पेट में जलन या अन्य दुष्प्रभाव भी कर सकता है।

इन दावों पर आधुनिक वैज्ञानिक शोध बहुत सीमित हैं, इसलिए इस तरह का प्रयोग बिना योग्य आयुर्वेदिक चिकित्सक या डॉक्टर की सलाह के नहीं करना चाहिए।

बरगद का दूध बतासे में डालकर खाने वाला नुस्खा ऐसा है कि थोड़ा लिया तो फायदा करेगा, ज़रा ज़्यादा हुआ तो शरीर तुरंत नोटिस ले लेगा।

भगवान शंकर के रहस्य

पिंकी कुंडू

भगवान शंकर का चित्र या मूर्ति देखी होगी। शिव की जटाएं हैं। उन जटाओं में एक चन्द्र चिह्न होता है। उनके मस्तक पर तीसरी आंख है। वे गले में सर्प और रुद्राक्ष की माला लपेटे रहते हैं। उनके एक हाथ में डमरू, तो दूसरे में त्रिशूल है। वे संपूर्ण देह पर भस्म लगाए रहते हैं। उनके शरीर के निचले हिस्से को वे व्याघ्र चर्म से लपेटे रहते हैं। वे वृषभ की सवारी करते हैं और कैलाश पर्वत पर ध्यान लगाए बैठे रहते हैं। इन सब शिव प्रतीकों के पीछे रहस्य है। शिव की वेशभूषा ऐसी है कि प्रत्येक धर्म के लोग उनमें अपने प्रतीक ढूंढ सकते हैं।

1. बरगद के पेड़ के नीचे दक्षिण दिशा की ओर मुख कर बैठे हुए भगवान शिव को दक्षिणमूर्ति कहा जाता है।दक्षिण भारत के कई मंदिरों में बरगद के पेड़ के नीचे दक्षिण दिशा की ओर मुख किये हुए भगवान शिव की मूर्तियों का पाया जाना आम बात है। शिव का यह रूप दक्षिणमूर्ति कहलाता है। यह रूप शिव को गुरुओं के गुरु के रूप में दर्शाता है।

2. दक्षिणमूर्ति कैलाश पर्वत के उपर और ध्रुव तारा के नीचे बैठते हैं। यह उत्तर दिशा में है और अब तक इस स्थान को इस गोल पृथ्वी का केंद्र माना जाता है। वह बरगद के पेड़ की छाया में बैठते हैं। बरगद का पेड़ भारत के साधु परंपराओं के साथ जुड़ा हुआ है और ये तपस्वी भौतिकवादी संसार के गृहस्थ लोगों को ज्ञान प्रदान करते हैं।

3. दक्षिण केंद्र में दक्षिणकाली प्रसिद्ध है जो देवी का सबसे भयंकर रूप मानी जाती है। यहां दक्षिण दिशा मृत्यु और परिवर्तन को दर्शाती है। यहां वैतरणी नदी बहती है। यह नदी जीवित लोगों की भूमि को मृतकों की भूमि से अलग करती है।

4. हिंदू गांवों में दक्षिण दिशा में शमशान भूमि का होना आम बात है। यहां मृतकों के शरीर को भी दक्षिण दिशा की ओर रखा जाता है। शिव के कई रूप हैं लेकिन इस रूप में शिव के गले के चारो ओर एक सर्प लिपटा हुआ है और जटाओं के उपर एक चांद है। उनकी दाहिनी तरफ पुरुष की और बाईं ओर स्त्री की बाली है।

5. यह स्वरूप तीन स्तरों को बतलाता है। पहला पौरुष और स्त्रीत्व रूप, दूसरा मन और भौतिकता और तीसरा नाम और रूपों के संसार के साथ अज्ञात और निराकार दुनिया। दक्षिणमूर्ति का बायां हाथ वरद मुद्रा को दर्शाता है जो दान की मुद्रा है। उनके दाहिने हाथ की मुद्रा में उनकी तर्जनी अंगुली अंगुठे को छूती दिखाई गई है जो ज्ञान या पांडित्य को दर्शाता है। यह मुद्रा उन्हें एक गुरु के रूप में भी दिखलाता है जो ज्ञान देते हैं।

6. उनके दो और हाथ दिखाए गये हैं। उनके संकेत अलग-अलग हैं लेकिन वो सभी पांडित्य को दर्शाते हैं। यह एक ईंधनविहीन ताप की आग है या ध्यान का अभ्यास है, जो ज्ञान को दर्शाता है और उन सभी गांठों को जला देता है जो मन को विस्तृत होने से रोकते हैं। उनकी जटा मे लिपटा सांप ज्ञान की जगमगाहट को दर्शाता है और संसार में लिप्त होने के बजाय यह इसकी उत्पत्ति के गवाहों में से एक है।

7. उनके पास मनकों की एक माला है जिसका उपयोग जाप करने और यादाश्त के लिए किया जाता है। उनके पास कई वाद्ययंत्र और किताबें हैं। उनके दाहिने पैर के नीचे अपस्मार नाम का एक राक्षस है जिसे विकृत यादों का राक्षस माना गया है और जो हमारे मन को अनंतता की ओर विस्तृत होने से रोकता है।

8. शिव अपना बायां पैर अपनी दाहिनी जांघ पर रखते हैं। पारंपरिक रूप से शरीर का बायां हिस्सा प्रकृति को दर्शाता है और दायां हिस्सा पुरुष को। नटराज की मूर्ति के अनुसार शिव अपने दाएं पैर को जमीन पर रखे हुए हैं और उनका बायां पैर या तो हवा में है या दाईं जांघ पर।

* इस छवि के विपरीत श्रीकृष्ण हमेशा अपने बाएं पैर पर आराम करते हैं या दायें पैर को बायें पैर के उपर रखते हैं। श्रीकृष्ण भौतिकता का आनंद लेते हैं पर वह इसमें ज्ञान को भी समाहित करते हैं। जब श्रीकृष्ण के दोनों पैर जमीन पर होते हैं तो इसका अर्थ है कि वो भौतिकता और ज्ञान दोनों को महत्ता देते हैं।

9. शिव भौतिकता के उपर ज्ञान को महत्ता देते हैं, इसलिये उनका केवल एक पैर जमीन पर होता है और इस कारण उन्हें एकपद यानि कि एक पैर वाला भगवान कहा जाता है। इस प्रकार सांकेतिक रूप से यह रूप ज्ञान के कई प्रकारों को बतलाता है जैसे कि, भौतिकवाद की उथल-पुथल जो दुख का कारण बनती है और उस विचलित मन को स्थिर करने का ज्ञान।

10. शिव के चरणों में कई संत बैठते हैं। शिव कभी-कभी उनलोगों को वेद और तंत्र का रहस्य बतलाते हैं। यह प्रवचन अगम या पौराणिक मंदिर परंपरा कहलाती है और यह निगम या वैदिक अनुष्ठान परंपरा का पूरक है। यह प्रवचन दक्षिणमूर्ति उपनिषद भी कहलाता है। शिव का यह रूप उत्तर भारत से ज्यादा दक्षिण भारत की परंपराओं में अधिक लोकप्रिय है। कहानी के अनुसार सभी साधू शिव के प्रवचन को सुनने के लिए उत्तर की ओर गये और इस कारण पृथ्वी उनके बोझ से एक ओर झुक गया।

* धरती को संतुलित करने के लिए शिव ने अपने शिष्य अगस्त्य को दक्षिण की ओर यात्रा करने को कहा। यही कारण है कि अगस्त्य दक्षिण के महान साधुओं में गिने जाते हैं। जिन साधुओं ने प्रवचन सुना, उन्होंने शिव से व्याघ्रपद का दान मांगा ताकि वो आसानी से उनकी पूजा के लिए जंगल से फूल इकठ्ठा कर सकें।

11. शिव ज्ञान का साक्षात रूप हैं। साधुओं के द्वारा नहीं बल्कि स्वयं देवी के द्वारा उनसे प्रश्न पूछे गये। बाद में उन्होंने शिव से शादी कर ली और उन्होंने उन्हें प्रवचन के लिए और अपने ज्ञान को चिंतन के माध्यम से साधुओं के बीच साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया।

* तंत्र में इसी प्रकार यह संवाद दिखाया गया है। अगर वो काल यानि समय हैं तो वो काली हैं जो समय को अपने अधीन रखती हैं। यह वो ही हैं जो शव को शिव बनाती हैं। यह देवी ही हैं जो दक्षिण से हैं, जो भौतिकता और परिवर्तन को मूर्त रूप देती हैं और जवाबों को प्रेरित करती हैं। जवाब केवल बोलकर ही नहीं दिए जाते हैं बल्कि इन्हें नृत्य या गीतों के द्वारा भी दर्शाया जाता है।

इसलिये भारतीय शास्त्रीय नृत्य इतना समृद्ध है।

भगवान शंकर के कई रहस्य है, लेकिन यहां मात्र पांच रहस्यों के बारे में बताया जा रहा हैं

1. शिव धनुष पिनाक को उठाना असंभव था लेकिन राम ने तोड़ दिया। शिवजी ने दो चक्र बनाए- एक भवरेंदु और दूसरा सुदर्शन।पाशुपतास्त्र और त्रिशूल का निर्माण भी उन्होंने किया था।

2. शिव के गले में जो नाग लिपटा रहता है उसका नाम वासुकि है। वासुकि के बड़े भाई का नाम शेषनाग है।

3. शिव के ७ शिष्य हैं जिन्हें प्रारंभिक सप्तऋषि माना गया है। ऋषि अगस्त्य उनमें प्रमुख थे।

4. शिव के गणों में भैरव, वीरभद्र, मणिभद्र, चंदिस, नंदी, श्रृंगी, भृगिरिटी, शैल, गोकर्ण, घंटाकर्ण, जय और विजय प्रमुख हैं।

5. सूर्य, गणपति, देवी, रुद्र और विष्णु ये शिव पंचायत कहलाते हैं। पंचायत का फैसला अंतिम माना जाता है।

12. शिव की वेशभूषा /शिव प्रतीकों के पीछे का रहस्य ?

*** शिव प्रतीकों के रहस्य**

1. चन्द्रमा : - शिव का एक नाम 'सोम' भी है। सोम का अर्थ चन्द्र होता है। उनका दिन सोमवार है। चन्द्रमा मन का कारक है। शिव द्वारा चन्द्रमा को धारण करना मन के नियंत्रण का भी प्रतीक है। हिमालय पर्वत और समुद्र से चन्द्रमा का सीधा संबंध है।

2. चन्द्र कला का महत्व : - मूलतः शिव के सभी त्योहार और पर्व चान्द्रमास पर ही आधारित होते हैं। शिवरात्रि, महाशिवरात्रि आदि शिव से जुड़े त्योहारों में चन्द्र कलाओं का महत्व है।

3. कई धर्मों का प्रतीक चिह्न : - यह अर्द्धचन्द्र शैवपंथियों और चन्द्रवंशियों के पंथ का प्रतीक चिह्न है। मध्य एशिया में यह मध्य एशियाई जाति के लोगों के ध्वज पर बना होता था। चंगेज खान के झंडे पर अर्द्धचन्द्र होता था। इस अर्धचंद्र का ध्वज पर होने का अपना ही एक अलग इतिहास है।

4. चन्द्रदेव से संबंध : - भगवान शिव के सोमनाथ ज्योतिर्लिंग के बारे में मान्यता है कि भगवान शिव द्वारा सोम अर्थात चन्द्रमा के श्राप का निवारण करने के कारण यहां चन्द्रमा ने शिवलिंग की स्थापना की थी। इसी कारण इस ज्योतिर्लिंग का नाम 'सोमनाथ' प्रचलित हुआ।

5. त्रिशूल : - भगवान शिव के पास हमेशा एक त्रिशूल ही होता था। यह बहुत ही अचूक और घातक अस्त्र था। इसकी शक्ति के आगे कोई भी शक्ति ठहर नहीं सकती।त्रिशूल * प्रकार के कष्टों दैनिक, दैविक, भौतिक के विनाश का सूचक भी है।

१ : - इसमें * तरह की शक्तियां हैं- सत, रज और तम। प्रोटॉन, न्यूट्रॉन और इलेक्ट्रॉन।त्रिशूल के * शूल सृष्टि के क्रमशः उदय, संरक्षण और लयीभूत होने का प्रतिनिधित्व करते भी हैं। शैव मतानुसार शिव इन तीनों भूमिकाओं के अधिपति हैं।

२ : - यह शैव सिद्धांत के पशुपति, पशु एवं पाश का प्रतिनिधित्व करता है।माना जाता है कि यह महाकालेश्वर के * कालों (वर्तमान, भूत, भविष्य) का प्रतीक भी है। इसके अलावा यह स्वपिंड, ब्रह्मांड और शक्ति का परम पद से एकत्व स्थापित होने का प्रतीक है। यह वाम भाग में स्थिर इड़ा, दक्षिण भाग में स्थित पिंगला तथा मध्य देश में स्थित सुषुम्ना नाड़ियों का भी प्रतीक है।

13. शिव का सेवक वासुकि : - शिव को नागवंशियों से घनिष्ठ लगाव था। नाग कुल के सभी लोग शिव के क्षेत्र हिमालय में ही रहते थे। कश्मीर का अनंतनाग इन नागवंशियों का गढ़ था। नाग कुल के सभी लोग शैव धर्म का पालन करते थे। भगवान शिव के नागेश्वर ज्योतिर्लिंग नाम से स्पष्ट है कि नागों के ईश्वर होने के कारण शिव का नाग या सर्प से अटूट संबंध है।

१ : - भारत में नागपंचमी पर नागों की पूजा की परंपरा है।विरोधी भावों में सामंजस्य स्थापित करने वाले शिव नाग या सर्प जैसे क्रूर एवं भयानक जीव को अपने गले का हार बना लेते हैं। लिपटा हुआ नाग या सर्प जकड़ी हुई कुंडलिनी शक्ति का प्रतीक है।

२ : - नागों के प्रारंभ में ५ कुल थे। उनके नाम इस प्रकार हैं-

१ : - शेषनाग (अनंत),
२ : - वासुकि,
3 : - तक्षक,
४ : - पिंगला और
५ : - कर्कोटक

ये शोध के विषय हैं कि ये लोग सर्प थे या मानव या आधे सर्प और आधे मानव ? हालांकि इन सभी को देवताओं की श्रेणी में रखा गया है, तो निश्चित ही ये मनुष्य नहीं होंगे।

3 : - नाग वंशावलियों में 'शेषनाग' को नागों का प्रथम राजा माना जाता है। शेषनाग को ही 'अनंत' नाम से भी जाना जाता है। ये भगवान विष्णु के सेवक थे। इसी तरह आगे चलकर शेष के बाद वासुकि हुए, जो शिव के सेवक बने। फिर तक्षक और पिंगला ने राज्य संभाला। वासुकि का कैलाश पर्वत के पास ही राज्य था और मान्यता है कि तक्षक ने ही तक्षकशिला (तक्षशिला) बसाकर अपने नाम से 'तक्षक' कुल चलाया था। उक्त पांचों की गाथाएं पुराणों में पाई जाती हैं।

४ : - उनके बाद ही कर्कोटक, ऐरावत, धृतराष्ट्र, अनत, अहि, मनिभद्र, अलापत्र, कंबल, अंशतर, धनंजय, कालिया, सौंफू, दौद्धिया, काली, तखतू, धूमल, फाहल, काना इत्यादि नाम से नागों के वंश हुए जिनके भारत के भिन्न-भिन्न इलाकों में इनका राज्य था।

14. डमरू :- सभी हिन्दू देवी और देवताओं के पास एक न एक वाद्य यंत्र रहता है। उसी तरह भगवान के पास डमरू था, जो नाद का प्रतीक है। भगवान शिव को संगीत का जनक भी माना जाता है। उनके पहले कोई भी नाचना, गाना और बजाना नहीं जानता था।

१ : - भगवान शिव दो तरह से नृत्य करते हैं- एक तांडव जिसमें उनके पास डमरू नहीं होता और जब वे डमरू बजाते हैं तो आनंद पैदा होता है।

१ : - नाद से ही वाणी के चारों रूपों की उत्पत्ति मानी जाती है।

१ : - पर,
२ : - पश्यंती,
3 : - मध्यमा और
४ : - वैखरी।

अब बात करते हैं नाद की, नाद अर्थात ऐसी ध्वनि, जो ब्रह्मांड में निरंतर जारी है जिसे 'ॐ' कहा जाता है। संगीत में अन्य स्वर तो आते-जाते रहते हैं, उनके बीच विद्यमान केंद्रीय स्वर नाद है।

१ : - आहत नाद का नहीं अपितु अनाहत नाद का विषय है। बिना किसी आघात के उत्पन्न चिदानंद, अखंड, अगम एवं अलख रूप सूक्ष्म ध्वनियों का प्रस्फुटन अनाहत या अनहद नाद है।

२ : - इस अनाहत नाद का दिव्य संगीत सुनने से गुप्त मानसिक शक्तियां प्रकट हो जाती हैं। नाद पर ध्यान की एकाग्रता से धीरे-धीरे समाधि लगने लगती है। डमरू इसी नाद-साधना का प्रतीक है। .

15. शिव का वाहन वृषभ : - वृषभ शिव का वाहन है। वे हमेशा शिव के साथ रहते हैं। वृषभ का अर्थ ..धर्म है। मनुस्मृति के अनुसार 'वृषो हि भगवान धर्मः'। वेद ने धर्म को ४ पैरों वाला प्राणी कहा है। उसके ४ पैर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष हैं। महादेव इस ४ पैर वाले वृषभ की सवारी करते हैं यानी धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष उनके अधीन हैं।

एक मान्यता के अनुसार वृषभ को नंदी भी कहा जाता है, जो शिव के एक गण हैं। नंदी ने ही धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, कामशास्त्र और मोक्षशास्त्र की रचना की थी।

16. जटाएं : - शिव अंतरिक्ष के देवता हैं। उनका नाम व्योमकेश है अतः आकाश उनकी जटास्वरूप है। जटाएं वायुमंडल की प्रतीक हैं। वायु आकाश में व्याप्त रहती है। सूर्य मंडल से ऊपर परमेष्ठि मंडल है। इसके अर्थ तत्व को गंगा की संज्ञा दी गई है अतः गंगा शिव की जटा में प्रवाहित है। शिव रुद्रस्वरूप उग्र और संहारक रूप धारक भी माने गए हैं।

माँ गंगा को जटा में धारण करने के कारण ही शिव को जल चढ़ाए जाने की प्रथा शुरू हुई। जब स्वर्ग से माँ गंगा को धरती पर उतारने का उपक्रम हुआ तो यह भी सवाल उठा कि माँ गंगा के इस अपार वेग से धरती में विशालकाय छिद्र हो सकता है, तब माँ गंगा पाताल में समा जाएगी।ऐसे में इस समाधान के लिए भगवान शिव ने माँ गंगा को सर्वप्रथम अपनी जटा में विराजमान किया और फिर उसे धरती पर उतारा।गंगोत्री तीर्थ इसी घटना का गवाह है।

17. भभूत या भस्म : - शिव अपने शरीर पर भस्म धारण करते हैं। भस्म जगत की निस्सारता का बोध कराती है। भस्म आकर्षण, मोह आदि से मुक्ति का प्रतीक भी है। देश में एकमात्र जगह उज्जैन के महाकाल मंदिर में शिव की भस्म आरती होती है जिसमें श्मशान की भस्म का इस्तेमाल किया जाता है।

यज्ञ की भस्म में वैसे कई आयुर्वेदिक गुण होते हैं। प्रलयकाल में समस्त जगत का विनाश हो जाता है, तब केवल भस्म (राख) ही शेष रहती है। यही दशा शरीर की भी होती है।

18. तीन नेत्र : - शिव को 'त्रिलोचन' कहते हैं यानी उनकी तीन आंखें हैं। प्रत्येक मनुष्य की भौहों के बीच तीसरा नेत्र रहता है। शिव का तीसरा नेत्र हमेशा जाग्रत रहता है, लेकिन बंद यदि आप अपनी आंखें बंद करेंगे तो आपको भी इस नेत्र का अहसास होगा।

शिव का यह नेत्र आधा खुला और आधा बंद है। यह इसी बात का प्रतीक है कि व्यक्ति ध्यान-साधना या संन्यास में रहकर भी संसार की जिम्मेदारियों को निभा सकता है।

१ : - त्र्यंबकेश्वर : - त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग के व्युत्पत्यर्थ के संबंध में मान्यता है कि तीन नेत्रों वाले शिवशंभू के यहां विराजमान होने के कारण इस जगह को त्र्यंबक (तीन नेत्र) के ईश्वर कहा जाता है।

२ : - पीनिअल ग्लैंड : आध्यात्मिक दृष्टि से कुंडलिनी जागरण में एक चक्र को भेदने के बाद जब षट्चक्र पूर्ण हो जाता है तो इसके बाद आत्मा का तीसरा नेत्र मलशून्य हो जाता है। वह स्वच्छ और प्रसन्न हो जाता है। शिव के तीसरे नेत्र को प्रमस्तिष्क (सेरिब्रम) की पीयूष-ग्रंथि (पीनिअल ग्लैंड) माना जाता है। पीयूष-ग्रंथि उन सभी ग्रंथियों पर नियंत्रण रखती है जिनसे उसका संबंध होता है।

19. हस्ति चर्म और व्याघ्र चर्म : - शिव अपनी देह पर हस्ति चर्म और व्याघ्र चर्म को धारण करते हैं। हस्ती अर्थात हाथी और व्याघ्र अर्थात शेर। हस्ती अभिमान का और व्याघ्र हिंसा का प्रतीक है अतः शिवजी ने अहंकार और हिंसा दोनों को दबा रखा है।

20. शिव का धनुष पिनाक : - शिव ने जिस धनुष को बनाया था उसकी टंकार से ही बादल फट जाते थे और पर्वत हिलने लगते थे। ऐसा लगता था मानो भूकंप आ गया हो। यह धनुष बहुत ही शक्तिशाली था। इसी के एक तीर से त्रिपुरासुर की तीनों नगरियों को ध्वस्त कर दिया गया था। इस धनुष का नाम पिनाक था।

१ : - देवी और देवताओं के काल की समाप्ति के बाद इस धनुष को देवराज को सौंप दिया गया था।उल्लेखनीय है कि राजा दक्ष के यज्ञ में यज्ञ का भाग शिव को नहीं देने के कारण भगवान शंकर बहुत क्रोधित हो गए थे और उन्होंने सभी देवताओं को अपने पिनाक धनुष से नष्ट करने की ठानी। एक टंकार से धरती का वातावरण भयानक हो गया। बड़ी मुश्किल से उनका क्रोध शांत किया गया, तब उन्होंने यह धनुष देवताओं को दे दिया।

२ : - देवताओं ने राजा जनक के पूर्वज देवराज को धनुष दे दिया। राजा जनक के पूर्वजों में निमि के ज्येष्ठ पुत्र देवराज थे। शिव-धनुष उन्हीं की धरोहरस्वरूप राजा जनक के पास सुरक्षित था। इस धनुष को भगवान शंकर ने स्वयं अपने हाथों से बनाया था। उनके इस विशालकाय धनुष को कोई भी उठाने की क्षमता नहीं रखता था। लेकिन भगवान राम ने इसे उठाकर इसकी प्रत्यंचा चढ़ाई और इसे एक झटके में तोड़ दिया।

21. शिव का चक्र : - चक्र को छोटा, लेकिन सबसे अचूक अस्त्र माना जाता था। सभी देवी-देवताओं के पास अपने-अपने अलग-अलग चक्र होते थे। उन सभी के अलग-अलग नाम थे। शंकरजी के चक्र का नाम भवरेंदु, विष्णुजी के चक्र का नाम कांता चक्र और देवी का चक्र मृत्यु मंजरी के नाम से जाना जाता था।

१ : - सुदर्शन चक्र का नाम भगवान कृष्ण के नाम के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है।यह बहुत कम ही लोग जानते हैं कि सुदर्शन चक्र का निर्माण भगवान शंकर ने किया था। प्राचीन और प्रामाणिक शास्त्रों के अनुसार इसका निर्माण भगवान शंकर ने किया था। निर्माण के बाद भगवान शिव ने इसे श्रीविष्णु को सौंप दिया था।

जरूरत पड़ने पर श्रीविष्णु ने इसे देवी पार्वती को प्रदान कर दिया। देवी पार्वती ने इसे परशुराम को दे दिया और भगवान कृष्ण को यह सुदर्शन चक्र परशुराम से मिला।भगवान शिव ने दिया था सुदर्शन चक्र- भगवान विष्णु के हाथों में हमेशा सुदर्शन चक्र सुशोभित रहता है. यह सुदर्शन चक्र भगवान शिव ने ही भगवान विष्णु को दिया था।

२ : - एक बार भगवान विष्णु शिव की आराधना कर रहे थे। विष्णु देवता ने भोलेनाथ को प्रसन्न करने के लिए हजारों कमल बिछा रखे थे। भगवान शिव यह देखना चाहते थे कि भगवान विष्णु की भक्ति में कितनी तत्परता है। इसलिए उन्होंने एक कमल उठा लिया।

* : - भगवान विष्णु सहस्त्रनाम लेते हुए शिवलिंग पर हर बार कमल का फूल चढ़ा रहे थे. जब विष्णु १०००वां नाम ले रहे थे तो उन्होंने पाया कि शिवलिंग पर अर्पित करने के लिए कोई भी फूल शेष नहीं रह गया है, तब भगवान विष्णु ने अपनी आंख निकालकर शिव को अर्पित कर दी भगवान विष्णु को कमलनयन कहा गया है इसलिए कमल के फूल के बजाए उन्होंने अपना नेत्र अर्पित कर दिया,अटूट भक्ति देखकर भगवान शिव ने भगवान विष्णु को सुदर्शन चक्र भेंट किया।

22. त्रिपुंड तिलक : - माथे पर भगवान शिव त्रिपुंड तिलक लगाते हैं। यह तीन लंबी धारियों वाला तिलक होता है। यह त्रिलोक्य और त्रिगुण का प्रतीक है। यह सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण का प्रतीक भी है। यह त्रिपुंड सफेद चंदन का या भस्म का होता है।

त्रिपुंड दो प्रकार का होता है

पहला तीन धारियों के बीच लाल रंग का एक बिंदु होता है। यह बिंदु शक्ति का प्रतीक होता है। आम इंसान को इस तरह का त्रिपुंड नहीं लगाना चाहिए।

दूसरा होता है सिर्फ तीन धारियों वाला तिलक या त्रिपुंड कहते है, इससे मन एकाग्र होता है।

------ "दिव्यदृष्टि साधना" -------

पिंकी कुंडू

यह भगवान श्रीविष्णु की साधना हैं इस साधना को करने से साधक की दिव्यदृष्टि खुलती हैं

उसको सूक्ष्म जगत दिखने लगता हैं वो अपने बारे में दूसरों के बारे में जान सकता हैं इस साधना का कोई समय नहीं हैं कोई अवधि नहीं हैं कोई नियम नहीं हैं क्योंकि कुछ लोगों को हफ़्ते में दिखना शुरू हो जाता हैं कुछ लोगों को 10 - 12 दिन लगते हैं कुछ लोगों को 18 - 20 दिन लगते हैं।

आप जितनी मेहनत करोगे उतनी स्तर की सिद्धि आपको प्राप्त होगी। पहले मन में भाव आते हैं फिर ब्लैक एंड व्हाइट में चीजें दिखती हैं फिर कलरफुल चीजें दिखती हैं फिर खुली आंखों से दिखना और कानों में आवाज़ आने लगती हैं। अब यह आप पर निर्भर करता हैं कि आप किस स्तर की सिद्धि पाना चाहते हैं और उसके लिए कितनी मेहनत करते हो

इसमें ना तो आपके साथ जुड़ी हुई नकारात्मक ऊर्जा दूर होगी ना आपके पास धन आने के लिए नवीन मार्ग बनेंगे ना ही आपकी कामना पूर्ति होगी।

यह दिव्यदृष्टि की साधना हैं और केवल आपकी दृष्टि ही खुलेगी अगर आपको नकारात्मक ऊर्जा से दिक्कत हैं तो उसके लिए रक्षा साधना करो धन पाना चाहते हो तो धनलाभ साधना करो सब कुछ इस साधना पर ना थोप दो

ये शक्ति की सिद्धि नहीं हैं ये दिव्यदृष्टि की सिद्धि हैं इसमें अपनी कुण्डलिनी शक्ति जागृत होती हैं और आज्ञा चक्र खुल जाता हैं मतलब ये कुछ कार्य नहीं करेगी न झाड़ा लगेगा न प्रार्थना स्वीकार होगी बस दिखना चालू हो जाएगा बाकी के काम के लिए आप अन्य मंत्रों की सिद्धि कर सकते हैं

श्रीहरि शरणम्

भगवान राम ने किया था शिव से युद्ध, पढ़ें पौराणिक कथा

पिंकी कुंडू

यह कथा पुराणों में मिलती है। सभी जानते हैं कि प्रभु श्री राम के आराध्यदेव शिव हैं, तब फिर राम कैसे शिव से युद्ध कर सकते हैं? पुराणों में विदित दृष्टांत के अनुसार यह युद्ध श्रीराम के अश्वमेध यज्ञ के दौरान लड़ा गया।

यज्ञ का अश्व कई राज्यों को श्री राम की सत्ता के अधीन किए जा रहा था। इसी बीच यज्ञ का अश्व देवपुर पहुंचा, जहां राजा वीरमणि का राज्य था। वीरमणि ने भगवान शंकर की तपस्या कर उनसे उनकी और उनके पूरे राज्य की रक्षा का वरदान मांगा था। महादेव के द्वारा रक्षित होने के कारण कोई भी उनके राज्य पर आक्रमण करने का साहस नहीं करता था। जब यज्ञ का घोड़ा उनके राज्य में पहुंचा तो राजा वीरमणि के पुत्र रुक्मांगद ने उसे बंदी बना लिया। ऐसे में अयोध्या और देवपुर में युद्ध होना तय था।

महादेव ने अपने भक्त को मुसीबत में जानकर वीरभद्र के नेतृत्व में नंदी, भृंगी सहित अपने सारे गणों को भेज दिया। एक और राम की सेना तो दूसरी ओर शिव की सेना थी। वीरभद्र ने एक त्रिशूल से राम की सेना के पुष्कल का मस्तक काट दिया। उधर भृंगी आदि गणों ने भी राम के भाई शत्रुघ्न को

बंदी बना लिया। बाद में हनुमान भी जब नंदी के शिवास्त्र से पराभूत होने लगे तब सभी ने राम को याद किया। अपने भक्तों की पुकार सुनकर श्रीराम तत्काल ही लक्ष्मण और भरत के साथ वहां आ गए।

श्रीराम ने सबसे पहले शत्रुघ्न को मुक्त कराया और उधर लक्ष्मण ने हनुमान को मुक्त करा दिया। फिर श्रीराम ने सारी सेना के साथ शिव गणों पर धावा बोल दिया। जब नंदी और अन्य शिव के गण परास्त होने लगे तब महादेव ने देखा कि उनकी सेना बड़े कष्ट में है तो वे स्वयं युद्ध क्षेत्र में प्रकट हुए, तब श्रीराम और शिव में युद्ध छिड़ गया।

भयंकर युद्ध के बाद अंत में श्रीराम ने पाशुपतास्त्र निकालकर कर शिव से कहा, 'हे प्रभु, आपने ही मुझे ये वरदान दिया है कि आपके द्वारा प्रदत्त इस अस्त्र से त्रिलोक में कोई पराजित हुए बिना नहीं रह सकता इसलिए हे महादेव, आपकी ही आज्ञा और इच्छा से मैं इसका प्रयोग आप पर ही करता हूं', ये कहते हुए श्रीराम ने वो महान दिव्यास्त्र भगवान शिव पर चला दिया।

वो अस्त्र सीधा महादेव के ह्रदयस्थल में समा गया और भगवान रुद्र इससे संतुष्ट हो गए। उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक श्रीराम से कहा कि आपने युद्ध में मुझे संतुष्ट किया है इसलिए जो इच्छा हो वर मांग लें।

इस पर श्रीराम ने कहा कि 'हे भगवन्, यहां मेरे भाई भरत के पुत्र पुष्कल सहित असंख्य योद्धा वीरगति को प्राप्त हो गए है, कृपया कर उन्हें जीवनदान दीजिए।' महादेव ने कहा कि 'तथास्तु।' इसके बाद शिव की आज्ञा से राजा वीरमणि ने यज्ञ का अश्व श्रीराम को लौटा दिया और श्रीराम भी वीरमणि को उनका राज्य सौंपकर शत्रुघ्न के साथ अयोध्या की ओर चल दिए।

नकल रहित परीक्षाओं के संचालन में सहयोग करें ग्राम पंचायत : डीसी

बोर्ड परीक्षा के लिए निर्धारित नियमों की कड़ाई से हो पालना
डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने दुजाना और महाराणा में बनाए गए परीक्षा केंद्रों का किया निरीक्षण

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 28 फरवरी। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने शनिवार को हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड की चल रही परीक्षाओं के चलते गांव महाराणा और दुजाना स्कूलों में बनाए गए परीक्षा केंद्रों का जायज़ा लेते हुए अधिकारियों को जरूरी निर्देश दिये।

डीसी ने कहा कि वार्षिक परीक्षाओं के लिए संबंधित अधिकारी एवं कर्मचारी निर्धारित ड्यूटी का गंभीरता से पालन करें। परीक्षा नकल रहित, शांतिपूर्ण हो, इसके लिए सभी दिशा निर्देशों की सख्ती से पालना सुनिश्चित की जाए।

डीसी ने जिला के सरपंचों से भी आह्वान किया है कि वे अपने-अपने गांवों में बनाए गए परीक्षा केंद्रों के बाहर भीड़ एकत्रित न होने दें।

डीसी ने कहा कि ड्यूटी पर तैनात संबंधित अधिकारी व सुपरवाईजर सभी हिदायतों का विशेष ध्यान रखें।

उन्होंने स्पष्ट किया कि बोर्ड परीक्षा शांतिप्रिय ढंग से सम्पन्न कराने के लिए जिला प्रशासन अलर्ट मोड में है। किसी भी रूप से भ्रामक जानकारी फैलाने व फेक

न्यूज पर प्रशासन की पैनी नजर है। उन्होंने आमजन को सचेत किया कि आधारहीन खबरों व अन्य भ्रामक जानकारी से बचें और कोई भी इस प्रकार की तथ्यहीन जानकारी साझा न करें।

बोर्ड परीक्षाओं के चलते परीक्षा केंद्रों पर रहे व्यापक व्यवस्था

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने परीक्षा केंद्रों के निरीक्षण के दौरान नकल रहित परीक्षा सम्पन्न करवाने के लिए ड्यूटी पर तैनात स्टाफ सदस्यों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी परीक्षा केंद्रों पर मूलभूत सुविधाएं पेयजल, बिजली, शौचालय एवं बैठने की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। इसके लिए सभी संबंधित अधिकारी परीक्षा केंद्रों का निरंतर निरीक्षण करें। सभी अधिकारी आपसी समन्वय बनाकर कार्य करें। उन्होंने स्पष्ट किया कि परीक्षाओं की पारदर्शिता और निष्पक्षता बनाए रखना प्रशासन की प्राथमिकता है।

जिला में 55 परीक्षा केंद्रों पर आयोजित की जा रही बोर्ड परीक्षा

डीसी ने बताया कि हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी के तत्वावधान में आयोजित परीक्षा के अंतर्गत जिला झज्जर में 55 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। परीक्षा नकल रहित करवाने के लिए बोर्ड स्तर, एसडीएम स्तर तथा खंड शिक्षा अधिकारी स्तर पर फ्लाईंग स्क्वायड का गठन किया गया है, जिसके तहत परीक्षा केंद्रों पर चेकिंग की जाएगी। सभी संबंधित विभागों के अधिकारी ईमानदारी, निष्पक्षता और अलर्ट मोड में कार्य करें। परीक्षा केंद्रों पर मोबाइल फोन व डिजिटल वॉच पर पाबंदी रहेगी। डीसी ने निर्देश दिए कि परीक्षा केंद्रों में विद्यार्थियों की एंट्री के दौरान सही से जांच सुनिश्चित की जाए।।

राष्ट्रीय ध्वज का सम्मान हम सभी का दायित्व : डीसी

परिवहन विशेष न्यूज

कटा या फटा राष्ट्रीय ध्वज न फहराएं, झंडा संहिता के अनुसार करें निस्तारण

झज्जर, 28 फरवरी। डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने कहा कि राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा देश की आन-बान और शान का प्रतीक है तथा इसका सम्मान करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। उन्होंने नागरिकों से अपील करते हुए कहा कि विभिन्न अवसरों और त्योहारों पर उत्साहपूर्वक तिरंगा फहराया जाता है, लेकिन यदि किसी स्थान पर फटा, कटा या रंग उड़ा हुआ राष्ट्रीय ध्वज हो तो उसे तुरंत बदलकर नया ध्वज फहराएं तथा पुराने ध्वज का सम्मानपूर्वक निस्तारण करें।

उपायुक्त ने कहा कि तिरंगा कभी भी मैला-कुचैला या क्षतिग्रस्त अवस्था में नहीं फहराया जाना चाहिए। राष्ट्रीय ध्वज के किसी भी भाग को जलाना, नुकसान पहुंचाना या मौखिक रूप से इसका अपमान करना कानूनन दंडनीय अपराध है, जिसके लिए तीन वर्ष तक का कारावास, जुर्माना या दोनों हो सकते हैं। उन्होंने बताया कि ध्वज पर कुछ भी लिखना या बनाना गैरकानूनी है तथा इसे किसी भी प्रकार की वर्दी या पोशाक में उपयोग नहीं किया जा सकता।

उन्होंने कहा कि किसी भी स्थिति में तिरंगा जमीन को स्पर्श नहीं करना चाहिए और किसी अन्य झंडे को राष्ट्रीय ध्वज से ऊंचा नहीं लगाया जा सकता। भारतीय झंडा संहिता में संशोधन के बाद अब प्रत्येक नागरिक किसी भी दिन राष्ट्रीय ध्वज फहरा सकता है, लेकिन उसके सम्मान और नियमों का पालन अनिवार्य है।

उन्होंने स्पष्ट किया कि राष्ट्रीय ध्वज को कभी भी कूड़ेदान में नहीं डालना चाहिए।

उन्होंने यह भी कहा कि यदि ध्वज पूरी तरह उपयोग योग्य हो तो उसे साफ-सुथरा करके घर के अंदर सम्मानपूर्वक सुरक्षित रखा जा सकता है, ताकि भविष्य में राष्ट्रीय पर्वों पर पुनः उपयोग किया जा सके।

उपायुक्त स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने कहा कि राष्ट्रीय गौरव अपमान निवारण अधिनियम, 1971 तथा भारतीय झंडा संहिता, 2021 के प्रावधानों के तहत राष्ट्रीय ध्वज के अपमान पर कड़ी कानूनी कार्रवाई का प्रावधान है। उन्होंने सभी नागरिकों से अपील की कि तिरंगे के प्रति पूर्ण सम्मान बनाए रखें और नियमों का पालन सुनिश्चित करें।

झज्जर में व्यापक स्तर पर चलाया जाएगा एचपीवी टीकाकरण अभियान
बेटियों को मिला सुरक्षा कवच, सर्वाइकल कैंसर मुक्त होगा झज्जर

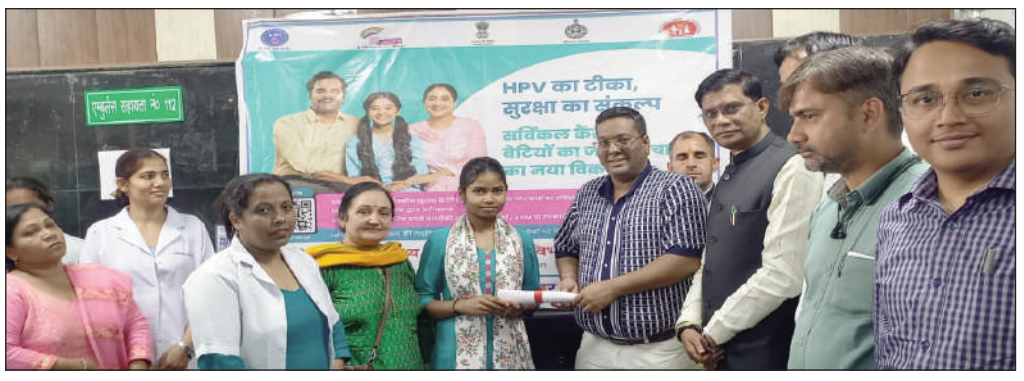

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल और जिला परिषद के चेयरमैन कप्तान सिंह बिरधाना ने संयुक्त रूप से किया अभियान का शुभारंभ

झज्जर, 28 फरवरी। जिले में बालिकाओं को गंभीर बीमारियों से सुरक्षित रखने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए शनिवार को जिला नागरिक अस्पताल में ह्यूमन पैपिलोमा वायरस (एचपीवी) वैक्सीनेशन अभियान का विधिवत शुभारंभ किया गया। डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने जिला परिषद चेयरमैन कप्तान सिंह बिरधाना की गरिमामयी उपस्थिति में रिबन काटकर अभियान की शुरुआत की। इस दौरान 14 आयु वर्ष की किशोरियों को एचपीवी वैक्सीन लगाकर अभियान की शुरुआत की गई। डीसी ने किशोरियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए।

उल्लेखनीय है कि देशव्यापी एचपीवी टीकाकरण अभियान की शुरुआत प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा की गई है।

इस बीच सिविल सर्जन डॉ. मंजू कादयान ने उपायुक्त और जिला परिषद चेयरमैन का स्वागत करते हुए अभियान की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि स्वास्थ्य विभाग द्वारा जिलेभर में अभियान को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए व्यापक तैयारियां पूरी कर ली गई हैं।

इस अवसर पर डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने कहा कि इस अभियान का मुख्य उद्देश्य महिलाओं में सर्वाइकल कैंसर जैसी रोकथाम योग्य बीमारी को जड़ से समाप्त करना है। केंद्र सरकार द्वारा देशभर में यह विशेष अभियान चलाया जा रहा है, ताकि किशोरियों को समय रहते सुरक्षा प्रदान की जा सके।

एचपीवी वायरस महिलाओं में सर्वाइकल कैंसर (गर्भाशय ग्रीवा कैंसर) का प्रमुख कारण है, और यह टीका इस गंभीर बीमारी से बचाव में अत्यंत प्रभावी है।

उन्होंने राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन और स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे शिक्षा विभाग व अन्य संबंधित विभागों के साथ समन्वय स्थापित कर अभियान को व्यापक स्तर पर सफलतापूर्वक संचालित करें।

जिला परिषद चेयरमैन कप्तान सिंह बिरधाना ने कहा कि बालिकाओं का स्वास्थ्य सुरक्षित रखना समाज और राष्ट्र की प्राथमिक जिम्मेदारी है।

उन्होंने कहा कि देश मे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व एवं हरियाणा प्रदेश में मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में प्रदेश की प्रत्येक पात्र किशोरी को यह सुरक्षा कवच प्रदान किया जाएगा।

एचपीवी टीकाकरण अभियान भविष्य में महिलाओं को गंभीर बीमारियों से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। उन्होंने अभिभावकों से अपील की कि वे अपनी बेटियों को टीकाकरण अवश्य करवाएं और इस जनहितकारी पहल का सहयोग करें।

कार्यक्रम में यह अधिकारी रहे मौजूद

कार्यक्रम में एसडीएम झज्जर अंकित कुमार चौकसे आईएएस, डिप्टी सिविल सर्जन डॉ टीएस बागड़ी, नोडल अधिकारी डॉ बसंत दुबे ,वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी डॉ अजय सिंगला, उप सिविल सर्जन डॉ टी.एस. बागड़ी, डॉ कुलदीप, डॉ नीरज आहूजा, डॉ सुनीता तंवर, डॉ पूनम बिश्नोई, डॉ मीनू, डॉ सुनील नरवाल, डॉ आकृति हुड्डा, उपाधीक्षक डॉ सुरेंद्र दहिया, वीसीसीएम विकास कुमार, पंकज शर्मा सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

अनुसूचित जाति के चयनित 11 लाभार्थियों के लिए ऑनलाइन परमिट जारी

पात्र लाभार्थी आगामी 3 मार्च तक डाउनलोड कर सकेंगे परमिट

झज्जर, 28 फरवरी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के सहायक कृषि अभियंता राजीव पाल ने बताया कि स्टेट प्लान एस बी-89 स्कीम 2025-26 के तहत अनुसूचित जाति के चयनित 11 लाभार्थीयों के ऑनलाइन परमिट जारी कर दिए गए हैं। संबंधित लाभार्थी अपना ऑनलाइन परमिट 3 मार्च तक डाउनलोड कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि लाभार्थी विभागीय पोर्टल पर उपलब्ध फर्मो में से अपनी रुचि अनुसार फर्म/डीलर से 8 मार्च तक ट्रैक्टर खरीद कर 10 मार्च तक खरीद बिल ई-वे बिल, रजिस्ट्रेशन आवेदन रसीद व ट्रेक्टर किसान व डीलर की लोकेशन सहित फोटो डीलर द्वारा अपलोड करने होंगे। लाभार्थियों को ये दस्तावेज सहायक कृषि अभियंता के कार्यालय में जमा करवाने होंगे। उन्होंने बताया कि योजना के अनुसार किसान को 45 एचपी या उससे अधिक क्षमता का ट्रैक्टर खरीदना होगा। ट्रैक्टर की लागत पर 50 प्रतिशत या अधिकतम 3 लाख रुपये तक का अनुदान दिया जाएगा। छह लाख रुपये तक की लागत पर आधी राशि तथा इससे अधिक लागत होने पर भी अधिकतम तीन लाख रुपये तक ही सहायता प्रदान की जाएगी।

बहादुरगढ़ में विधायक राजेश जून ने किया एचपीवी वैक्सीनेशन अभियान का शुभारंभ

बेटियों के उज्ज्वल एवं सुरक्षित भविष्य के लिए एचपीवी टीकाकरण जरूरी : विधायक राजेश जून

परिवहन विशेष न्यूज

बहादुरगढ़,28 फरवरी। स्थानीय नागरिक अस्पताल में शनिवार को विधायक राजेश जून की अध्यक्षता में एचपीवी वैक्सीनेशन अभियान का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम के दौरान पात्र किशोरियों को एचपीवी वैक्सीन लगाकर अभियान की शुरुआत की गई।

इस अवसर पर बहादुरगढ़ के विधायक राजेश जून ने कहा कि सर्वाइकल कैंसर महिलाओं में तेजी से बढ़ती गंभीर बीमारी है, जिसकी रोकथाम अब वैक्सीनेशन के माध्यम से संभव है। उन्होंने अभिभावकों से अपील की कि वे अपनी बेटियों के उज्ज्वल एवं सुरक्षित भविष्य के लिए टीकाकरण अभियान का लाभ अवश्य उठाएं। उन्होंने कहा कि केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा महिलाओं के स्वास्थ्य संरक्षण के लिए यह एक ऐतिहासिक कदम है और हमें मिलकर इसे सफल बनाना है।

उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा चलाए जा रहे इस निःशुल्क एचपीवी वैक्सीनेशन अभियान का उद्देश्य सर्वाइकल कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी से बालिकाओं को सुरक्षा प्रदान करना है। उन्होंने किशोरियों के अभिभावकों एवं सामाजिक संगठनों से अपील की है कि वे अधिक से अधिक किशोरियों को इस अभियान से जोड़ें।

इस अवसर पर वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी डॉ विनय देशवाल, डॉ ममता, डॉ सुंदरम (अर्बन नोडल अधिकारी), डॉ गगन जैन (अर्बन हेल्थ कंसल्टेंट) सहित अधिकारीगण एवं स्वास्थ्य कर्मी उपस्थित रहे।

बरवाला में 7 मार्च को पंडित दीन दयाल उपाध्याय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) भारतीय जनता पार्टी के बरवाला मंडल द्वारा 7 मार्च, शनिवार को पंडित दीन दयाल उपाध्याय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन होली होम पब्लिक स्कूल, बरवाला में किया जाएगा। यह शिविर मंडल स्तर की कार्यकारिणी का होगा, जिसमें मंडल के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता भाग लेंगे।

शिविर के सफल एवं दिव्य आयोजन को लेकर किसान विश्राम गृह, बरवाला में मंडल की कोर कमेटी की बैठक मंडल प्रभारी प्रवीण बंसल के नेतृत्व में आयोजित की गई। बैठक में आयोजन की रूपरेखा, जिम्मेदारियों का वितरण एवं व्यवस्थाओं पर विस्तार से चर्चा की गई।

मंडल प्रभारी प्रवीण बंसल ने जानकारी देते हुए बताया कि यह प्रशिक्षण शिविर 24 घंटे का रहेगा। शिविर में सात वक्ता विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन देंगे और प्रत्येक वक्ता एक-एक घंटे का अपना वक्तव्य प्रस्तुत करेगा। प्रशिक्षण शिविर स्थल पर ही रात्रि विश्राम की व्यवस्था रहेगी, ताकि कार्यकर्ता पूर्ण समय प्रशिक्षण का लाभ ले सकें।

मंडल अध्यक्ष मोनू संदूजा ने मंडल प्रभारी प्रवीण बंसल, प्रदेश सचिव युवा मोर्चा भाजपा विपिन लोहिया एवं उपस्थित जिला पदाधिकारियों का स्वागत करते हुए कहा कि यह प्रशिक्षण शिविर संगठन को और अधिक मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं से शिविर को सफल बनाने के लिए सक्रिय सहभागिता का आह्वान किया।

इस अवसर पर जिला उपाध्यक्ष भाजपा पवन शर्मा, जिला सचिव प्रवीण सैनी एवं पूजा गुंदली, मंडल उपाध्यक्ष एवं सीएम विंडो एमिनेंट पर्सन सुरेश गोयल, मंडल महामंत्री एवं मार्केट कमेटी बरवाला वाइस चेयरमैन रोशन घनघस, जिला आईटी सह प्रमुख भाजपा कमल हंदूजा, मंडल आईटी प्रमुख श्याम सुंदर, मंडल कोषाध्यक्ष सीए संदीप गोयल, मंडल मीडिया प्रभारी राजेश सलूजा, विनोद भुक्कल, मोहित काठपाल, सिद्धार्थ जांगड़ा युवा मोर्चा मंडल अध्यक्ष, काकू पार्षद, अनूप सैनी मनोनीत पार्षद, मोहित सैनी, ओमप्रकाश सैनी सहित अनेकों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

नजफगढ़ में उज्ज्वला योजना का ऐतिहासिक वितरण: 252 लाभार्थियों को लाभ

पिंकी कुंडू सह संपादक

नजफगढ़ में सामाजिक न्याय की नई ऊंचाई

नजफगढ़ डिपो के समीप वाटिका में आयोजित एक भव्य समारोह में प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के अंतर्गत 252 नए गैस कनेक्शन वितरित किए गए। श्री राकेश प्रजापति, योजना लाभार्थी विभाग के राष्ट्रीय चेयरमैन की अध्यक्षता में संपन्न इस कार्यक्रम ने ग्रामीण एवं शहरी गरीब परिवारों को स्वच्छ ईंधन की सुलभता प्रदान की, जो पर्यावरण संरक्षण और महिला सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

प्रमुख अतिथियों की उपस्थिति ने दी गरिमा

कार्यक्रम में संसदीय, विधानसभा एवं स्थानीय स्तर के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति ने इसे विशेष महत्व प्रदान कियाः

* आदरणीय श्रीमती कमल जी शेरावत, लोकसभा सांसद (पश्चिमी दिल्ली)।
* आदरणीय श्रीमती नीलम पहलवान, विधायक (नजफगढ़)।
* श्रीमती रेखा रानी, निगम पार्षद।
* श्रीमान सतपाल मलिक, पूर्व महापौर।
* श्रीमान बैंक पहलवान, डिप्टी चेयरमैन (नजफगढ़)।
* श्रीमान संजय बुधवार, अध्यक्ष एवं वाइस चेयरमैन (नजफगढ़ जिला)।
* श्रीमान राजीव झुलझूली, प्रदेश चेयरमैन।
* श्रीमान राजकुमार ढिल्लों, पूर्व महापौर एवं विधायक प्रत्याशी।
* सुनीता शर्मा, महिला चेयरमेन नजफगढ़ क्षेत्र

श्रीमान राम मोहन एवं अन्य स्थानीय नेताओं एवं पदाधिकारियों का योगदान कार्यक्रम को सफल बनाने में स्थानीय नेताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाईः श्री तरुण जी, श्री अनिल जी, पूनम, नीरज वर्मा, शालू सिंगल, श्री प्रदीप सिंघल, श्री अनिल डगर (मंडल अध्यक्ष) ।जिला, मंडल एवं प्रदेश स्तर के पदाधिकारी।

यह आयोजन ना केवल उज्ज्वला योजना के लक्ष्यों को मजबूत करता है, बल्कि नजफगढ़ क्षेत्र में सामाजिक एकता का प्रतीक भी है। जनहित में ऐसी योजनाओं का विस्तार आवश्यक है ताकि हर परिवार को स्वच्छ ऊर्जा का लाभ मिले।

छत्तीसगढ़ राज्य औद्योगिक विकास निगम की रैम्प योजना से लाभान्वित हुए लोग

भावसर फाउंडेशन द्वारा उद्यमिता विकास हेतु विशेष सत्र का आयोजन

सुनील चिंचोलकर

बिलासपुर, छत्तीसगढ़। छत्तीसगढ़ स्टेट इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड द्वारा रतनपुर और कोटा में संचालित रैम्प योजना के अंतर्गत कार्यान्वयन संस्था भावसर फाउंडेशन द्वारा ईडीपी-लीप (उद्यमिता विकास कार्यक्रम – नेतृत्व एवं उद्यम प्रगति) प्रशिक्षण सत्र का सफल आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य युवाओं, संभावित उद्यमियों तथा सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (एमएसएमई) संचालकों को उद्यम स्थापना एवं विस्तार के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल एवं व्यवहारिक मार्गदर्शन प्रदान करना था। प्रशिक्षण में बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

व्यवसाय योजना से विपणन रणनीति तक मिला व्यापक मार्गदर्शन

प्रशिक्षण सत्र के दौरान व्यवसाय योजना निर्माण, वित्तीय प्रबंधन, विपणन रणनीति, शासकीय योजनाओं की जानकारी, वैधानिक अनुपालन तथा उद्यम विकास से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई। प्रतिभागियों को सैद्धांतिक जानकारी के साथ व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से वास्तविक परिस्थितियों में व्यवसाय संचालन की समझ भी विकसित कराई गई।

संसाधन व्यक्ति संध्या चंद्रसेन ने साझा किए अनुभव

कार्यक्रम की मुख्य संसाधन व्यक्ति संध्या चंद्रसेन (रिसोर्स पर्सन, भावसर फाउंडेशन) रहीं। उन्होंने उद्यमिता विकास के विभिन्न आयामों को सरल, स्पष्ट एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। उनके मार्गदर्शन से प्रतिभागियों में आत्मविश्वास का संचार हुआ तथा उद्यम स्थापना के प्रति सकारात्मक सोच विकसित हुई।

प्रतिभागियों ने बताया प्रेरणादायक और उपयोगी

प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण सत्र को अत्यंत उपयोगी एवं प्रेरणादायक बताते हुए भविष्य में भी इस प्रकार के कार्यक्रमों के आयोजन की अपेक्षा व्यक्त की।

कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें सभी प्रतिभागियों एवं सहयोगी संस्थाओं के प्रति आभार व्यक्त किया गया। भावसर फाउंडेशन ने RAMP योजना के अंतर्गत भविष्य में भी कौशल विकास एवं उद्यमिता संवर्धन के लिए ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

जिला स्तरीय वित्तीय एवं डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम का सफल आयोजन

बदायूं संवाददाता: शिवेंद्र यादव

बदायूँ: NIIT Foundation द्वारा Mahindra Finance के सौजन्य से दिनांक 28 फरवरी को बदायूँ में जिला स्तरीय वित्तीय एवं डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन Budaun City Mall में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य आमजन को वित्तीय साक्षरता, डिजिटल लेन-देन की सुरक्षा, विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी तथा साइबर अपराध से बचाव के प्रति जागरूक करना रहा। उपस्थित प्रतिभागियों को डिजिटल माध्यमों के सुरक्षित उपयोग, ऑनलाइन धोखाधड़ी से बचने के उपाय एवं वित्तीय प्रबंधन से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जिला पंचायत राज अधिकारी यावर अब्बास उपस्थित रहे। साथ ही साइबर क्राइम इंस्पेक्टर रजत यादव ने साइबर फ्रॉड से बचाव के विषय में विस्तार से जानकारी दी। समाज कल्याण विभाग से गुंजन शर्मा एवं प्रीति चौहान ने विभागीय योजनाओं की जानकारी साझा की। मुहतशाम सिद्दीकी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

NIIT Foundation की ओर से प्रोजेक्ट मैनेजर कुलदीप प्रजापति के नेतृत्व में (ट्रेनर)

नदीम हैदर, रिदा खान, मुशीर अली, श्री मनोज, अंजली एवं जुनैद द्वारा कार्यक्रम का सफल संचालन किया गया।

कार्यक्रम के माध्यम से बड़ी संख्या में उपस्थित नागरिकों को डिजिटल एवं वित्तीय रूप से सशक्त बनने की दिशा में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। आयोजकों ने भविष्य में भी ऐसे जागरूकता कार्यक्रम निरंतर आयोजित करने का संकल्प व्यक्त किया।

गुजरात में सेमीकंडक्टर क्षेत्र को बढ़ावा: नरेंद्र मोदी ने माइक्रोन सुविधा के उद्घाटन पर किया संबोधन

संगिनी घोष

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुजरात में Micron Technology की सेमीकंडक्टर सुविधा के उद्घाटन के अवसर पर सभा को संबोधित किया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल, केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव, माइक्रोन के सीईओ संजय मेहरोत्रा, भारत में अमेरिका के राजदूत सर्जियो गोर तथा उपमुख्यमंत्री हर्ष सांघवी सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री ने इसे भारत के सेमीकंडक्टर विनिर्माण पारिस्थितिकी तंत्र को सुदृढ़ करने और तकनीकी आत्मनिर्भरता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया।

ऐसे देखें तो, यह उद्घाटन केवल औद्योगिक निवेश नहीं बल्कि वैश्विक सेमीकंडक्टर आपूर्ति श्रृंखला में भारत की रणनीतिक उपस्थिति का संकेत है।

भारत–अमेरिका तकनीकी सहयोग को बल

माइक्रोन नेतृत्व और अमेरिकी राजदूत की उपस्थिति ने उच्च प्रौद्योगिकी क्षेत्र में भारत–अमेरिका सहयोग को रेखांकित किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि सेमीकंडक्टर निर्माण इलेक्ट्रॉनिक्स, दूरसंचार, ऑटोमोबाइल और रक्षा उद्योग के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

रोजगार और कौशल विकास को बढ़ावा

अधिकारियों के अनुसार, यह सुविधा रोजगार सृजन, कौशल विकास और डिजाइन से विनिर्माण तक की क्षमता को मजबूत करेगी। यह परियोजना देश में चिप निर्माण को प्रोत्साहित करने और आयात निर्भरता कम करने की व्यापक नीति से जुड़ी है।

यह परियोजना क्यों अहम है

विशेषज्ञों का मानना है कि एआई, 5जी, इलेक्ट्रिक वाहन और उन्नत कंप्यूटिंग जैसी तकनीकों के लिए सेमीकंडक्टर आधारभूत भूमिका निभाते हैं। ऐसे निवेश भारत के औद्योगिक परिवर्तन और वैश्विक प्रतिस्पर्धा को नई दिशा दे सकते हैं।

ऐसे देखें तो, गुजरात की यह सुविधा भारत के उच्च-प्रौद्योगिकी विनिर्माण के नए अध्याय की शुरुआत मानी जा सकती है।

मुख्य बिंदु

* गुजरात में माइक्रोन सेमीकंडक्टर सुविधा का उद्घाटन।
* प्रधानमंत्री ने समारोह को संबोधित किया।
* भारत–अमेरिका तकनीकी सहयोग को मजबूती।
* रोजगार और कौशल विकास की संभावनाएँ।
* आत्मनिर्भर भारत और उच्च-तकनीकी विनिर्माण पर जोर।
* वैश्विक चिप आपूर्ति श्रृंखला में भारत की भूमिका मजबूत करने की दिशा।

आगे की दिशा

विश्लेषकों का मानना है कि नीतिगत समर्थन, अवसंरचना विकास और कुशल मानव संसाधन के साथ भारत सेमीकंडक्टर क्षेत्र में वैश्विक केंद्र के रूप में उभर सकता है। माइक्रोन की यह पहल उसी दिशा में एक महत्वपूर्ण आधारशिला मानी जा रही है।

4 मार्च । जन्मदिन विशेष : कहने में कम, करने में आगे: रणबीर सिंह गंगवा

कहने में कम, करने में आगे: रणबीर सिंह गंगवा

(जो गांव से चला, गांव के लिए जिया — जनता का नेता, ज़मीन से जुड़ा व्यक्तित्व, गांव, किसान और गरीब की सच्ची आवाज़)

(रणबीर सिंह गंगवा हरियाणा की राजनीति में एक ऐसे नेता हैं, जिनकी पहचान शोर से नहीं, काम से बनी है। गांव की मिट्टी से उठकर उन्होंने जनसेवा को अपना मूल मंत्र बनाया। जिला परिषद से लेकर कैबिनेट मंत्री तक का उनका सफर निरंतर संघर्ष, संगठनात्मक निष्ठा और जनविश्वास की कहानी है। लोक निर्माण विभाग और सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के मंत्री के रूप में उनका फोकस साफ है—बेहतर सड़कें, स्वच्छ पेयजल और पारदर्शी व्यवस्था। वे मानते हैं कि मजबूत गांव ही मजबूत हरियाणा की नींव हैं। इसी सोच के साथ वे सड़कों के विस्तार, जलापूर्ति और ग्रामीण बुनियादी ढांचे को प्राथमिकता दे रहे हैं। सादगी, स्वच्छ छवि और जमीनी जुड़ाव उनकी सबसे बड़ी ताकत है। पिछड़े वर्गों, किसानों और गरीबों की आवाज़ बनकर रणबीर गंगवा ने साबित किया है कि राजनीति अगर ईमानदारी और सेवा भाव से की जाए, तो बदलाव ज़मीनी स्तर पर दिखता है।)

— डॉ. प्रियंका सौरभ

रणबीर सिंह गंगवा हरियाणा की राजनीति में उन चुनिंदा नेताओं में गिने जाते हैं, जिन्होंने ग्रामीण पृष्ठभूमि से उठकर निरंतर संघर्ष, संगठनात्मक निष्ठा और जनसेवा के बल पर कैबिनेट मंत्री तक का सफर तय किया। वे आज हरियाणा सरकार में लोक निर्माण विभाग (PWD) तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के कैबिनेट मंत्री हैं और नायब सिंह सैनी मंत्रिमंडल में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उनका जीवन पिछड़े वर्गों, किसानों और ग्रामीण समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

रणबीर सिंह गंगवा का जन्म 4 मार्च 1964 को हरियाणा के हिसार जिले के गंगवा गांव में कुम्हार (प्रजापति) परिवार में हुआ। उनके पिता राजाराम और माता केसर देवी साधारण ग्रामीण जीवन से जुड़े थे। सीमित संसाधनों के बीच पले-बढ़े गंगवा ने उच्च माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की और प्रारंभ से ही सामाजिक कार्यों में रुचि दिखाई। ग्रामीण परिवेश में रहते हुए उन्होंने किसानों, मजदूरों और पिछड़े वर्गों की समस्याओं को नज़दीक से समझा, जिसने आगे चलकर उनकी राजनीति की दिशा तय की।

उनका पहला औपचारिक चुनाव जिला परिषद का था। वर्ष 2000 में उन्होंने हिसार जिला परिषद का चुनाव लड़ा, जहां उन्हें प्रारंभिक पराजय का सामना करना पड़ा। लेकिन इस हार ने उन्हें और मजबूत बनाया। 2005 में वे दोबारा चुनाव जीतकर जिला परिषद सदस्य बने और बाद में उपाध्यक्ष पद तक पहुंचे। इस दौरान उन्होंने ग्रामीण सड़कों, पेयजल, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए उल्लेखनीय कार्य किए। यही कालखंड उनके राजनीतिक जीवन की मजबूत नींव बना।

2009 में उन्होंने नलवा विधानसभा क्षेत्र से इंडियन नेशनल लोकदल के टिकट पर चुनाव लड़ा। इस चुनाव में उन्हें कांग्रेस के वरिष्ठ नेता संपत सिंह से हार का सामना करना पड़ा, किंतु उनका राजनीतिक प्रभाव बना रहा। 2010 में उन्हें इंडियन नेशनल लोकदल की ओर से राज्यसभा भेजा गया। राज्यसभा सदस्य के रूप में उन्होंने हरियाणा के ग्रामीण और पिछड़े वर्गों से जुड़े मुद्दों को राष्ट्रीय स्तर पर उठाया और अपनी सक्रियता से पहचान बनाई।

2014 में वे नलवा विधानसभा क्षेत्र से विधायक निर्वाचित हुए। इस चुनाव में उन्होंने संपत सिंह और पूर्व उपमुख्यमंत्री चंद्रमोहन जैसे दिग्गज नेताओं को पराजित किया। विधायक के रूप में उन्होंने क्षेत्र में विकास कार्यों को गति दी और जनता से निरंतर संवाद बनाए रखा।

2019 में उन्होंने भारतीय जनता पार्टी का दामन थामा और नलवा से पुनः जीत दर्ज की। विधानसभा में उन्हें उपाध्यक्ष (डिप्टी स्पीकर) की जिम्मेदारी सौंपी गई, जहां उन्होंने सदन की कार्यवाही को सुचारू और मर्यादित ढंग से संचालित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2024 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने उन्हें बरवाला विधानसभा क्षेत्र से उम्मीदवार बनाया। यह राजनीतिक रूप से एक नई चुनौती थी, लेकिन रणबीर गंगवा ने इसे अवसर में बदल दिया। उन्होंने बरवाला से ऐतिहासिक जीत दर्ज कर पहली बार वहां भाजपा को विजय दिलाई। इसी जीत के बाद उन्हें नायब सैनी मंत्रिमंडल में कैबिनेट मंत्री के रूप में शामिल किया गया। लगभग 34 वर्षों के राजनीतिक संघर्ष का यह महत्वपूर्ण पड़ाव था।

कैबिनेट मंत्री बनने के बाद रणबीर गंगवा को लोक निर्माण विभाग (PWD) और सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग की जिम्मेदारी सौंपी गई। उन्होंने स्पष्ट किया कि उनका उद्देश्य विभाग को पारदर्शी और जवाबदेह बनाना है। हरियाणा में लगभग 30,664 किलोमीटर लंबी सड़कों का नेटवर्क पीडब्ल्यूडी के अंतर्गत आता है। वर्ष 2025–26 के लिए 6,500 किलोमीटर सड़कों की नई कार्पेटिंग का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। गुणवत्ता सुनिश्चित करने और भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए सख्त निगरानी प्रणाली लागू की गई है।

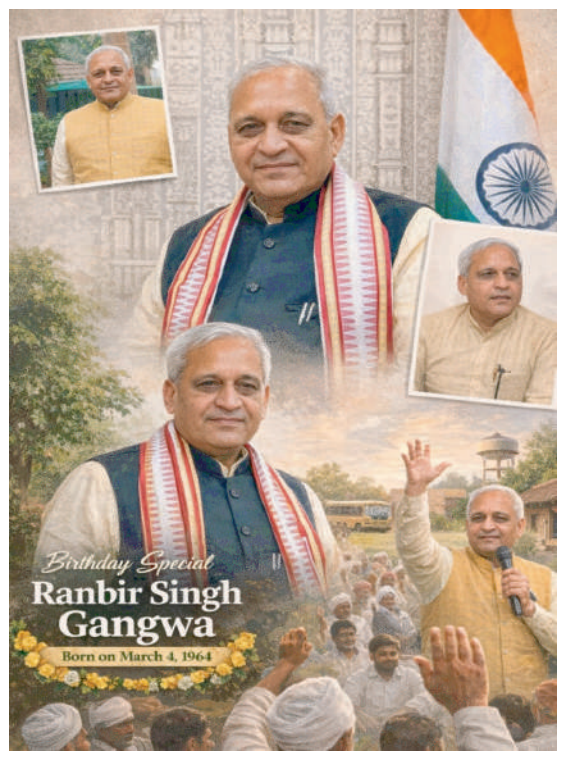

सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के तहत उनका फोकस ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति, पाइपलाइन विस्तार और जल संरक्षण योजनाओं पर है। हरियाणा स्वर्ण जयंती महाग्राम योजना के माध्यम से गांवों में बुनियादी सुविधाओं को सुदृढ़ किया जा रहा है। उनका मानना है कि मजबूत गांव ही मजबूत हरियाणा की नींव हैं।

रणबीर गंगवा को पिछड़े वर्गों का सशक्त प्रतिनिधि माना जाता है। प्रजापति समाज में उनकी विशेष पकड़ है और वे ओबीसी समुदाय की आवाज़ उठाने के लिए जाने जाते हैं। उनकी सादगी और सहजता उन्हें आम जनता के बीच लोकप्रिय बनाती है।

उनकी राजनीति की एक बड़ी विशेषता उनकी स्वच्छ छवि है। 34 वर्षों के सार्वजनिक जीवन में उनके खिलाफ कोई आपराधिक मामला दर्ज नहीं है। उनकी घोषित संपत्ति और देनदारियां चुनावी हलफनामों में पारदर्शी रूप से दर्ज हैं, जो उनकी ईमानदारी और जवाबदेही को दर्शाती हैं।

रणबीर सिंह गंगवा का जीवन यह संदेश देता है कि निरंतर परिश्रम, जमीनी जुड़ाव और जनसेवा के प्रति समर्पण से व्यक्ति ऊंचाइयों तक पहुंच सकता है। जिला परिषद से लेकर कैबिनेट मंत्री तक का उनका सफर संघर्ष और दृढ़ इच्छाशक्ति की प्रेरक कहानी है। आज वे हरियाणा की राजनीति में एक सक्रिय, जमीनी और विकासोन्मुखी नेता के रूप में स्थापित हो चुके हैं और उनके नेतृत्व में प्रदेश का बुनियादी ढांचा नई दिशा में आगे बढ़ रहा है।

(डॉ. प्रियंका सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), कवयित्री एवं सामाजिक चिंतक हैं।)

सूर्य का प्रकाश नहीं, प्रकाश संश्लेषण नहीं — तो फिर गहरा समुद्र ऑक्सीजन कैसे बना रहा है?

● विजय गर्ग

प्रकाश संश्लेषण में कार्बन डाइऑक्साइड और पानी को ग्लूकोज और ऑक्सीजन में परिवर्तित करने के लिए सूर्य की रोशनी का उपयोग किया जाता है। यह प्रक्रिया सतही जल में होती है जहां प्रकाश पहुंच सकता है।

दशकों से, वैज्ञानिकों का मानना था कि पृथ्वी पर लगभग सभी ऑक्सीजन प्रकाश संश्लेषण के माध्यम से उत्पन्न होती है — यह प्रक्रिया सूर्य की रोशनी द्वारा संचालित होती है और पौधों, शैवाल और साइनोबैक्टीरिया द्वारा निष्पादित की जाती है। इस समझ के अनुसार, गहरे महासागर में, जहां सूर्य का प्रकाश प्रवेश नहीं कर सकता, ऑक्सीजन उत्पन्न करने वाले वातावरण की बजाय ऑक्सीजन उपभोग करने वाला वातावरण होना चाहिए।

हालाँकि, हाल ही में गहरे समुद्र में किए गए शोध से आश्चर्यजनक प्रक्रियाएं सामने आई हैं जो पूर्ण अंधकार में भी ऑक्सीजन उत्पन्न कर सकती हैं। ये खोजें समुद्री रसायन विज्ञान, गहरे समुद्र के पारिस्थितिकी तंत्र और यहां तक कि जीवन की उत्पत्ति के बारे में हमारी समझ को नया रूप दे रही हैं।

ऑक्सीजन उत्पादन के लिए सूर्य का प्रकाश क्यों महत्वपूर्ण है

प्रकाश संश्लेषण में कार्बन डाइऑक्साइड और पानी को ग्लूकोज और ऑक्सीजन में परिवर्तित करने के लिए सूर्य की रोशनी का उपयोग किया जाता है। यह प्रक्रिया सतही जल में होती है जहां प्रकाश पहुंच सकता है। लगभग 200 मीटर से नीचे, जिसे एफोटिक जोन के रूप में जाना जाता है, सूर्य का प्रकाश गायब हो जाता है। वर्षों तक वैज्ञानिकों ने यह मान लिया था कि इन गहराईओं में पाई जाने वाली ऑक्सीजन को सतही जल से समुद्र परिसंचरण के माध्यम से ले जाया जाता है।

लेकिन उभरते शोध से पता चलता है कि गहरे समुद्र में ऑक्सीजन का उत्पादन भी हो सकता है।

डार्क ऑक्सीजन उत्पादन की खोज

2024 में, एंड्रयू स्वीटमैन के नेतृत्व में शोधकर्ताओं की एक टीम ने प्रशांत महासागर के समुद्र तल पर अप्रत्याशित ऑक्सीजन वृद्धि की सूचना दी। उनके निष्कर्षों से पता चला कि प्रकाश के बिना भी ऑक्सीजन उत्पन्न हो रही थी - एक घटना जिसे अब अक्सर डार्क ऑक्सीजन उत्पादन कहा जाता है।

गहरे समुद्र तल पर तैनात सेंसरों ने सीलबंद प्रयोगात्मक कक्षों में भी ऑक्सीजन के स्तर को बढ़ाते हुए रिकॉर्ड किया, जिससे प्रकाश संश्लेषण या ऊपरी जल से मिश्रण की संभावना समाप्त हो गई।

सूर्य के प्रकाश के बिना ऑक्सीजन कैसे बन सकती है?

वैज्ञानिक कई तंत्रों की खोज कर रहे हैं जो इस आश्चर्यजनक घटना को समझा सकते हैं:

धातु नोड्यूल से विद्युत रासायनिक प्रतिक्रियाएं

बहुधातु नोड्यूल्स — मैंगनीज, निकेल, कोबाल्ट और लोहे से भरपूर चट्टान जैसे भंडार — गहरे समुद्र तल के विशाल क्षेत्रों को कवर करते हैं।

ये नोड्यूल प्राकृतिक बैटरियों की तरह काम कर सकते हैं:

समुद्री जल एक इलेक्ट्रोलाइट के रूप में कार्य करता है

खनिज सतहों से विद्युत ढाल उत्पन्न होती है

विद्युत-रासायनिक प्रतिक्रियाएं जल अणुओं को विभाजित करती हैं

ऑक्सीजन एक उपोत्पाद के रूप में जारी किया जाता है

यदि बड़े पैमाने पर इसकी पुष्टि हो जाए तो यह प्रक्रिया पहले से अज्ञात ऑक्सीजन

स्रोत का प्रतिनिधित्व कर सकती है। 2. रेडियोलिसिस: प्राकृतिक विकिरण द्वारा जल का विभाजन

समुद्री तल के तलछटों में प्राकृतिक रेडियोधर्मी क्षय जल अणुओं को हाइड्रोजन और ऑक्सीजन में विभाजित कर सकता है। यह प्रक्रिया, जिसे रेडियोलिसिस के नाम से जाना जाता है, प्रकाश के बिना होती है और इसे गहरे भूमिगत वातावरण में देखा गया है।

यद्यपि उत्पादन दर छोटी है, फिर भी वे सूक्ष्मजीव पारिस्थितिकी तंत्र को समर्थन देने के लिए पर्याप्त हो सकती हैं। 3. सूक्ष्मजीव रासायनिक प्रक्रियाएँ

कुछ सूक्ष्मजीव नाइट्रोजन और सल्फर यौगिकों से संबंधित रासायनिक प्रतिक्रियाओं के माध्यम से ऑक्सीजन उत्पन्न कर सकते हैं।

इसका एक उदाहरण नाइट्राइट-संचालित अवायवीय मीथेन ऑक्सीकरण है, जिसमें सूक्ष्मजीव नाइट्राइट को नाइट्रोजन गैस और ऑक्सीजन में परिवर्तित कर देते हैं — जिससे ऑक्सीजन रहित वातावरण में भी मीथेन का सेवन किया जा सकता है।

ये सूक्ष्मजीव मार्ग अद्वितीय गहरे समुद्र जीवन को बनाए रख सकते हैं।

यह खोज क्यों मायने रखती है

गहरे समुद्र के पारिस्थितिकी तंत्र का समर्थन करना

डार्क ऑक्सीजन उत्पादन से पृथक, ऑक्सीजन-सीमित वातावरण में जीवन को बनाए रखने में मदद मिल सकती है, जिससे सूक्ष्मजीवों, कीड़ों, क्रस्टेशियंस और अन्य गहरे समुद्र के जीवों का समर्थन हो सकता है।

महासागरीय ऑक्सीजन चक्रों पर पुनर्विचार

यदि गहरे समुद्र में ऑक्सीजन उत्पादन व्यापक रूप से फैल रहा है, तो वैज्ञानिकों को वैश्विक ऑक्सीजन चक्र और कार्बन भंडारण के मॉडलों को संशोधित करने की आवश्यकता हो सकती है।

जलवायु विज्ञान के लिए निहितार्थ

गहरे समुद्र की रसायन विज्ञान कार्बन पृथक्करण और जलवायु विनियमन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ऑक्सीजन स्रोतों को समझने से जलवायु पूर्वानुमान में सुधार होता है।

पृथ्वी से परे जीवन के बारे में सुराग

सूर्य के प्रकाश के बिना ऑक्सीजन उत्पादन से अंधेरे वातावरण में जीवन की संभावनाएं बढ़ जाती हैं, जैसे कि यूरोपा और एन्सेलाडस जैसे बर्फीले चंद्रमाओं पर उपसतह महासागर।

एक सीमा अभी भी खोजी जा रही है

वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि डार्क ऑक्सीजन उत्पादन पर अभी भी जांच चल रही है। यह निर्धारित करने के लिए कि यह प्रक्रिया कितनी व्यापक और महत्वपूर्ण है, विभिन्न महासागरीय बेसिनों में अधिक माप की आवश्यकता है।

फिर भी यह खोज एक मौलिक धारणा को चुनौती देती है: कि ऑक्सीजन उत्पादन के लिए सूर्य की रोशनी आवश्यक है।

गहरे समुद्र — जिसे लंबे समय से ऑक्सीजन का मौन उपभोक्ता माना जाता था, शायद चुपचाप इसका उत्पादन भी कर रहा है।

निष्कर्ष

पूर्ण अंधकार में ऑक्सीजन के उत्पन्न होने की संभावना से पता चलता है कि पृथ्वी के महासागरों के बारे में हम अभी भी कितना कम जानते हैं। समुद्र तल पर विद्युत रासायनिक प्रतिक्रियाओं से लेकर सूक्ष्मजीव रसायन और प्राकृतिक विकिरण तक, गहरे समुद्र ने वैज्ञानिकों को आश्चर्यचकित करना जारी रखा है।

सूर्य के प्रकाश के बिना भी, जीवन एक रास्ता खोज लेता है — और समुद्र में अभी भी कई रहस्य हैं जो उजागर होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

अथ यूजीसी कांड द्वितीय सर्ग : इति घुटने का पेट की तरफ मुड़ना

(आलेख : बादल सरोज)

दंगे, फसाद, उत्पात और भ्रष्टाचार के सारे रिकॉर्ड ध्वस्त करने के बाद अब गुजरात सरकार ने तय किया है कि वह शादी-विवाहों की पुरोहिताई का काम भी अपने हाथ में लेगी। इसकी शुरुआत उसने विवाह रजिस्ट्रेशन के कानून में बदलाव के साथ की है। मोदी जिसे अपना बताते हैं, उस गुजरात के उपमुख्यमंत्री हर्ष सिंघवी ने विधानसभा में बोला कि ' अनेक व्यक्तियों और सामाजिक संगठनों के ज्ञापन और सुझाव मिलने के बाद सरकार ने यह निर्णय लिया है कि अब रजिस्टर्ड विवाह करने वाले युगल को सहायक पंजीयक के यहाँ शपथपत्र देकर यह भी घोषित करना होगा कि उन्होंने अपनी शादी के बारे में अपने माता-पिता यानि अभिभावकों को बता दिया है।' इस प्रस्तावित कानून के तहत उन्हें अपने विवाह आवेदनों के साथ अपने माता-पिता के पते, आधार कार्ड नम्बर और संपर्क फोन नम्बर भी जमा करने होंगे। इसके बाद 10 दिन में सहायक रजिस्ट्रार इन अभिभावकों को सूचित करेगा और उसके बाद यदि वह 'संतुष्ट' हो जाता है, तो उसकी संतुष्टि के 30 दिन बाद शादी पंजीकृत की जायेगी।

बदलाव का यह गुजरात मॉडल अभी तक प्रचलित स्पेशल मैरिज एक्ट 1954 -- जो देश के सभी धर्मों, जातियों के नागरिकों के लिए एक ₹सिविल विवाह₹ का विकल्प प्रदान करता है – की भावना को पूरी तरह खत्म कर देने की बदनीयती से बढ़ा एक बड़ा कदम है। स्पेशल मैरिज एक्ट का यह कानून मुख्य रूप से लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष समाज बनाने और नागरिकों को व्यक्तिगत स्वतंत्रता देने के उद्देश्य से बनाया गया था। यह ऐसा क़ानून था, जिसकी मंशा समाज में अलग-अलग धर्मों या जातियों के बीच होने वाले विवाहों को प्रोत्साहन देने, उसे कानूनी मान्यता प्रदान करने की थी ,ताकि धीरे-धीरे सामाजिक भेदभाव कम हो सके। पूरे देश में इस तरह के कई विवाहों के लिए कुछ लाख रुपयों की नकद प्रोत्साहन राशि, नौकरियों में प्राथमिकता जैसे प्रावधान तक किये गए थे। यह उन जोड़ों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है, जो बिना धर्म बदले या बिना किसी धार्मिक रीति-रिवाज के शादी करना चाहते हैं। यह कानून हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन और बौद्ध सहित सभी धर्मों और किसी भी धर्म को न मानने वाले लोगों पर लागू होता है। मुस्लिम या हिंदू विवाह कानून जैसे पर्सनल लॉ के तहत अक्सर शादी के लिए एक साथी को अपना धर्म बदलना पड़ता था। यह एक्ट बिना धर्म बदले शादी का विकल्प देता है। इसी के साथ इस तरह शादी करने वाले जोड़ों को संपत्ति, विरासत और तलाक जैसे मामलों में ऐसा एक समान कानूनी ढांचा और सुरक्षा प्रदान करता है, जो किसी धार्मिक ग्रंथ के बजाय देश के संविधान पर आधारित होता है। इस कानून के माध्यम से यह भी सुनिश्चित किया जाता है कि शादी करने वाला व्यक्ति पहले से विवाहित न हो, जिससे धोखाधड़ी और बहुविवाह की संभावना भी कम हो जाती है। अभी तक इसकी प्रक्रिया आसान है। शादी करने के इच्छुक जोड़े को अपने जिले के ₹विवाह अधिकारी₹ को लिखित नोटिस देना होता है। नोटिस मिलने के बाद अधिकारी इसे अपने नोटिस बोर्ड पर चस्पा कर सार्वजनिक करता है। अगले 30 दिनों तक किसी भी व्यक्ति को इस विवाह पर कानूनी आपत्ति, जैसे पहले से शादीशुदा होना दर्ज करने का अधिकार होता है। यदि कोई वैध आपत्ति नहीं आती है, तो तीन गवाहों की उपस्थिति में विवाह अधिकारी के सामने शादी संपन्न होती है और मैरिज सर्टिफिकेट जारी कर दिया जाता है।

देश के वयस्क नागरिकों के निजी जीवन में हस्तक्षेप और जीवन साथी चुनने के उनके संवैधानिक अधिकार को सीमित और लगभग असंभव बनाने वाले इस संशोधन के लिए 'लव जिहाद' का घिसा-पिटा, विभाजनकारी और निराधार बहाना बनाया गया हैं। ध्यान रहे कि खुद मोदी सरकार संसद और सूचना के अधिकार में दिए गए जवाब तथा सुप्रीम कोर्ट में दिए हलफनामे में मान चुकी है कि लव जिहाद जैसी कोई चीज अस्तित्व में नहीं है। मगर कुनबा जानता है कि उसने समाज के भीतर अपने दुष्प्रचार के जरिये काफी हद तक इस तरह का माहौल बना लिया है कि ज़रा-सा मुस्लिम एंगल देकर लोकतंत्र और संविधान के किसी भी निषेध को गले उतारा जा सकता है।

हाल के कुछ वर्षों में छेड़े गए धुर साम्प्रदायिक अभियान में सिर्फ आरएसएस ही नहीं जुटा, प्रधानमंत्री मोदी, उनके मंत्रिमंडल के मंत्रियो और भाजपा मुख्यमंत्रियों सहित प्रशासन, यहाँ तक कि इस विचारधारा से संबद्ध न्यायपालिका में विराजे 'सज्जनों' ने भी बढ़-चढ़कर योगदान दिया। मुंह में सबका साथ सबका विकास रहा, बगल में आबादी के अलग-अलग हिस्सों को एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा करने और लड़वाने का छुरा रहा। कभी श्मशान बनाम कब्रिस्तान, कभी होली बनाम ईद, कभी कपड़ों से की जाने वाली पहचान, तो कभी सब्जी ठेलों से लेकर दुकानों तक नाम लिखवाकर, उसे बहिष्करण का जरिया बनाया गया। इस तरह देश की हजारों वर्ष पुरानी सहजीवन और साझी संस्कृति को छिन्न-भिन्न तथा नष्ट-भ्रष्ट करने की कोशिशें की गयीं। बिना किसी तरह के आंकड़े बताये कुछ दशकों में हिन्दू आबादी के अल्पमत में चले जाने का खतरा बताकर भाजपा शासित राज्यों में धर्म परिवर्तन वाले कानूनों की झड़ी लगा दी गयी। इस नफरती मुहिम ने आज देश को कहाँ लाकर खड़ा कर दिया है, इसकी ताज़ी मिसाल बदायूं का बताया जाने वाला वह विडियो है, जिसमें नमाज से लौट रहे एक वृद्ध सहित मुस्लिम पहनावे वाले व्यक्तियों के साथ खुद को बजरंग दल का अध्यक्ष बताने वाला गुंडा गाली-गलौज और मारपीट कर रहा है। एक और चिंताजनक विडियो है, जिसमे स्कूल बस में वापस लौट रही छोटी-छोटी बच्चियां अपनी ही सहपाठी एक मुस्लिम बच्ची के बारे में अनर्गल बोल रही हैं। यह आपराधिक ध्रुवीकरण कितना नीचे तक जा चुका है, इसका एक उदाहरण सर्वोच्च न्यायालय के जज जस्टिस उज्ज्वल भुइयाँ ने दिया, जब उन्होंने बताया कि किस तरह मुसलमान जैसा लगने वाला नाम होने की वजह से एक पीएचडी छात्रा को मकान देने से साफ़ मनाकर दिया गया। यह कही दूरदराज नहीं, राजधानी दिल्ली का विस्तार कहे जाने वाले नोयडा में हुआ।

कुनबा जानता है कि एक बार 'हिन्दू खतरे में' का जुमला चेप कर कुछ भी टेपा जा सकता है। इसलिए गुजरात सरकार ने इस संशोधन के साथ वही आजमाने की कोशिश की है। मगर मसला लव जिहाद नहीं है, इरादा लोकतंत्र के तिरस्कार, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की नींव पर खड़े सभ्य समाज के ढाँचे के नकार और संविधान के धिक्कार का है। अब तक के हासिल के उस संहार का है, जिसे कुनबा मध्ययुगीन समाज में लौटने का 'धर्मयुद्ध' कहता बताता है। असल मकसद मुसलमानों या ईसाईयों, सिखों या बौद्धों का नहीं है, उस ब्राह्मण धर्म की बहाली का है, जिसके आधार पर राष्ट्र बनाना और चलाना संघ अपना लक्ष्य और ध्येय मानता है। हाल में यूजीसी के नए नियमों के खिलाफ मचाये उत्पात ने, जिसे हिन्दू कहा जाता है, उस आबादी के उस विराट बहुमत को उसकी 'हैसियत' दिखाने में अपनी पूरी ताकत झोंक देने वालों ने इसी 'ब्राह्मण धर्म' की दुहाई दी थी। अब वे बेगानी शादी में बिन बुलाये ही पुरोहिताई करके महिलाओं को मनु की अंधेरी कंदरा में धकेल देना चाहते हैं।

गुजरात क़ानून बनाकर ऐसा करना चाहता है, तो यूपी में योगी की सरकार बिना कानून बनाये ही युगल दम्पत्तियों का जीना मुहाल किये हुए है। बारह अंतर्धार्मिक जोड़ों – जिनमे 7 में युवती मुस्लिम और युवक हिंदू, 5 में युवती हिन्दू और युवक मुस्लिम समुदाय से थे – के मामले में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने योगी सरकार को आईना दिखाया है। इन बारहों मामलों में किसी ने भी धर्म नहीं बदला था, इसके बावजूद सरकार उन्हें धर्म परिवर्तन कनून के नाम पर परेशान कर रही थी। हाईकोर्ट ने साफ किया कि इस देश में वयस्कों को विवाह करने, साथ रहने का अधिकार है, किसी व्यक्ति, परिवार या सरकार को उसमे टांग अड़ाने का अधिकार नहीं है। ऐसा किया जाना देश की विविधता के लिए खतरनाक होगा। राज्य का कर्तव्य है कि वह उनके जीवन और स्वतन्त्रता के अधिकार की हिफाजत करे। अदालत के हस्तक्षेप से भले यह रुक गया हो, मगर इससे संघ और भाजपा की मंशा उजागर हो जाती है।

विवाह और अपना अच्छा जीवन साथी चुनने तथा बुरे जीवन साथी से मुक्ति पाने के प्रश्नों पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और इस पूरे विचार समूह की समझदारी क्या है, इसके लिए डॉ आंबेडकर द्वारा लाये गए हिन्दू कोड बिल पर इनके रुख पर निगाह डालना जरूरी है। डॉक्टर भीमराव आंबेडकर ने 11 अप्रैल 1947 को संविधान सभा के सामने हिंदू कोड बिल पेश किया। यह बिल हिंदू महिलाओं को तलाक का अधिकार, संपत्ति में उत्तराधिकार और अंतर्जातीय विवाह जैसे कानूनी अधिकार देने के प्रावधान करता था। इस तरह ऐसी तमाम कुरीतियों को दूर करना चाहता था, जिन्हें अपनी महान धार्मिक परंपरा के नाम पर कुछ कट्टरपंथी जिंदा रखना चाहते थे। जैसे ही इस क़ानून का मसौदा रखा गया, वैसे ही आरएसएस, सावरकर की अगुआई वाली हिन्दू महासभा और ऐसे ही कुछ संगठन इसके खिलाफ कपड़े फाड़ने पर आमादा हो गए। इसे हिंदू समाज की 'धर्मसम्मत' सामाजिक संरचना और कानूनों में राज्य का हस्तक्षेप बताने लगे। तत्कालीन सरसंघचालक एमएस गोलवलकर ने अगस्त 1949 के अपने एक भाषण में कहा कि ' आंबेडकर जिन सुधारों की बात कर रहे हैं, वे भारतीयता से बहुत दूर हैं। इस देश में विवाह और तलाक जैसे सवाल अमेरिकी या ब्रिटिश मॉडल से नहीं सुलझेंगे। हिंदू संस्कृति और कानून के अनुसार, विवाह एक ऐसा संस्कार है, जिसे मृत्यु के बाद भी बदला नहीं जा सकता।' आरएसएस के मुखपत्र 'ऑर्गनाइज़र' में इसे ₹हिंदू कानून, संस्कृति और धर्म पर एक क्रूर और अज्ञानी आक्षेप₹ कहा। ये सब मिल-मिलाकर आन्दोलन में उतर गए। दिसंबर 1949 में आरएसएस ने दिल्ली के रामलीला मैदान में एक विरोध सभा की गयी, जिसमें इस हिन्दू कोड बिल को ₹हिंदू समाज पर परमाणु बम₹ और 'रोलेट एक्ट' तक बताया गया। इसके बाद संघ स्वयंसेवकों ने संसद पर प्रदर्शन किया और नेहरू-अंबेडकर के पुतले जलाए। इनकी मांग थी कि हिंदू कानून शास्त्रों के अनुसार ही चलें, न कि लैंगिक समानता के उन आधुनिक सिद्धांतों पर, जिन्हें यह बिल लेकर आ रहा है। रामलीला मैदान की इस सभा में इस आन्दोलन के एक प्रमुख नेता करपात्री महाराज ने बाबा साहब की जाति को लेकर और उनके द्वारा लिखे जा रहे संविधान के बारे में घोर जातिवादी टिप्पणी भी की थी।

विवाह संस्था के प्रति इस कुनबे का रुख सिर्फ अंतर्धार्मिक विवाहों के विरोध तक ही सीमित नहीं है, वे अंतर्जातीय विवाहों के भी सख्त खिलाफ है। इस बारे में अनेक बार संघ और जिन्हें वह अपना विचारक मानता है, उनके लिखे-कहे में दोहराया जाता रहा है। इस संबंध में संघ, जिन्हें गुरु जी मानता है, उन एम एस गोलवलकर के दो उद्धरण ही काफी है। पहला उद्धरण मनुस्मृति सम्मत वर्णाश्रम की महानता को लेकर हैं, जिसमे वे कहते हैं कि ₹आज हम अज्ञानता के कारण वर्ण व्यवस्था को बदनाम करने की कोशिश करते हैं। लेकिन इसी व्यवस्था के माध्यम से ही संपत्ति के प्रति लालसा को नियंत्रित करने का एक बड़ा प्रयास किया जा सका... समाज में कुछ लोग बुद्धिजीवी होते हैं, कुछ उत्पादन और धन कमाने में कुशल होते हैं और कुछ श्रम करने में सक्षम होते हैं। हमारे पूर्वजों ने समाज में इन चार व्यापक विभाजनों को देखा था। वर्ण व्यवस्था का अर्थ इन विभाजनों का उचित समन्वय और व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुसार समाज की सेवा करने में सक्षम बनाना है, जिसके लिए वंशानुगत रूप से उन कार्यों का विकास होता है, जिनके लिए वह सबसे उपयुक्त है। यदि यह व्यवस्था जारी रहती है, तो प्रत्येक व्यक्ति के लिए जन्म से ही आजीविका का साधन आरक्षित हो जाता है।₹ (ऑर्गेनाइज़र , 2 जनवरी, 1961, पृष्ठ 5 और 16)

दूसरे में तो वे सामाजिक व्यवहार की सारी सीमाओं को ही लांघ जाते हैं। 17 दिसंबर, 1960 को गुजरात विश्वविद्यालय के समाज विज्ञान विभाग के छात्रों के बीच बोलते हुए वे कहते हैं कि 'आज तो पारस्परिक प्रजनन – क्रॉस ब्रीडिंग -- के प्रयोग केवल पशुओं पर ही किए जाते हैं। लेकिन मनुष्यों पर ऐसे प्रयोग करने का साहस तो आज के तथाकथित आधुनिक वैज्ञानिकों में भी नहीं दिखता ..... किन्तु हमारे पूर्वज इस मामले में कितने महान थे कि उन्होंने यह साहसी नियम बनाया था कि किसी भी वर्ग की विवाहित महिला की पहली संतान का पिता नम्बूदिरी ब्राह्मण होना चाहिए, और उसके बाद ही वह अपने पति से संतान उत्पन्न कर सकती थी। आज इस प्रयोग को व्यभिचार कहा जाएगा, लेकिन तब ऐसा नहीं था, क्योंकि यह नियम केवल पहली संतान तक ही सीमित था। (ऑर्गेनाइज़र, 2 जनवरी, 1961, पृष्ठ 5)।

यह सिर्फ पुरानी बातें नहीं हैं। संघ के वर्तमान सरसंघचालक भी इसे बीच-बीच में दोहराते रहते हैं। लिव इन और समलैंगिक विवाहों को लेकर उनकी राय जगजाहिर है। अभी कुछ वर्ष पहले ही उन्होंने कहा था कि विवाह एक 'सामाजिक अनुबंध' है, जिसके तहत पति और पत्नी के बीच एक समझौता होता है। इस अनुबंध के अनुसार, पत्नी को घर संभालना चाहिए और पति की जरूरतों का ध्यान रखना चाहिए। बदले में, पति का धर्म है कि वह पत्नी की सुरक्षा करे और उसकी सभी जरूरतों को पूरा करे। जब तक पत्नी घर की जिम्मेदारी निभाती है, पति को उसे साथ रखना चाहिए। यदि वह इस अनुबंध का पालन नहीं करती है, तो पति उसे छोड़ सकता है।' ध्यान रहे, उन्होंने ऐसी ही या कैसी भी स्थिति आने पर पत्नी द्वारा पति को छोड़ने की बात भूले से भी नहीं कही। सोच का यही तरीका है, जो बलात्कारों को लेकर कभी इलाहाबाद, कभी कलकत्ता, तो हाल ही में छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट के जुगुप्सा जगाने वाले महिला विरोधी फैसलों और गुजरात हाईकोर्ट द्वारा पति के पत्नी को थप्पड़ मारे जाने को हिंसा न मानते हुए 'वैदिकी हिंसा, हिंसा न भवति' के सूत्र में पति महोदय को भी अभयदान देने के सिद्धांत में दिखाई देता है।

गुजरात सरकार के कानूनों में किये जाने वाले बदलाव को इन संदर्भों के साथ, इस सबकी पृष्ठभूमि में देखने से प्रस्तावित संशोधन का असली मंतव्य समझा जा सकता है। अपने सौवें वर्ष में संघ उस हर अनकिये को करना चाहता है, जिसे इस देश की जनता ने उसे नहीं करने दिया था। इसे रोकना है, तो उसी जनता को जोर से ना कहना होगा।

(लेखक 'लोकजतन' के संपादक और अखिल भारतीय किसान सभा के संयुक्त सचिव हैं।

कुशवासी महोत्सव–2026 का आधिकारिक लोगो लोकार्पित

29--31 मार्च त्रिदिवसीय आयोजन की तैयारियो की समीक्षा बैठक सम्पन्न

डॉ. शंभु पंवार

नईदिल्ली, 28 फरवरी। राष्ट्र स्तरीय सांस्कृतिक आयोजन कुशवासी महोत्सव–2026 के अंतर्गत आयोजित विशेष बैठक में महोत्सव के आधिकारिक लोगो का विधिवत लोकार्पण किया गया। उपस्थित पदाधिकारियों ने लोगो को भारतीय लोक परंपरा, सांस्कृतिक अस्मिता और सामाजिक समरसता का प्रतीक बताते हुए इसे क्षेत्रीय पहचान का गौरव बताया।

बैठक में 29, 30 और 31 मार्च 2026 को मेला मैदान भस्मा कुशवासी में प्रस्तावित त्रिदिवसीय महोत्सव की विस्तृत रूपरेखा पर चर्चा की गई। आयोजन को सुव्यवस्थित एवं प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न समितियों का गठन कर दायित्वों का निर्धारण किया गया। साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रारंभिक संरचना को अंतिम रूप प्रदान किया गया।

महोत्सव के आयोजन में सहयोगी संस्था के रूप में क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र (संस्कृति विभाग, उ.प्र.) एवं राजकीय बौद्ध संग्रहालय का सहयोग प्राप्त हो रहा है। आयोजन पूर्णतः जनसहयोग से संपन्न किया जाएगा।

बैठक में धरा धाम इंटरनेशनल के प्रमुख संत डॉ. सौरभ पाण्डेय, राजन सिंह सूर्यवंशी, डॉ. राजा भाऊ सेठ, डॉ. विनय श्रीवास्तव, बिपिन पाण्डेय, आशुतोष शुक्ल, राजन राम त्रिपाठी, श्वेतिमा माधव प्रिया, कृष्णचंद पाण्डेय, सोमनाथ पाण्डेय, श्री चंद शुक्ला, विजय मोदनवाल, कृपा शंकर राय, कृष्णचंद शुक्ला, देवव्रत पाण्डेय, गौतम पाण्डेय, उमेश त्रिपाठी, संजय उर्फ लारा, मुन्ना यादव, शिब्बू सिंह, बलवंत, हरि सेवक त्रिपाठी, डॉ. धर्मेंद्र पाण्डेय, सरोज शुक्ला, मनोज कुमार यादव, गोलई पाण्डेय, गुरु पाण्डेय, संदीप त्रिपाठी, साधु शरण यादव एवं बाल भक्त सौराष्ट्र सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे।

इस अवसर पर डॉ. सौरभ पाण्डेय ने कहा कि कुशवासी महोत्सव–2026 क्षेत्रीय लोक संस्कृति को राष्ट्रीय मंच प्रदान कर क्षेत्र के समग्र विकास, सांस्कृतिक जागरण और सामाजिक समरसता को नई दिशा देगा। बैठक के अंत में सभी उपस्थित सदस्यों ने महोत्सव को ऐतिहासिक बनाने का संकल्प लिया।

जेएनयू राजद्रोह केस के एक दशक बाद : भारतीय विश्वविद्यालयों में असहमति की ख़ामोश आवाज़ें

(आलेख : तारुषि असवानी)

दिल्ली विश्वविद्यालय के अलग-अलग कॉलेजों की ओर जाने वाली सड़कों पर ईंटों की दीवारों पर लगे चमकीले बैनर एक साहित्य महोत्सव का ऐलान करते हैं। बैनरों के मुताबिक यह महोत्सव 12 से 14 फरवरी के बीच डीयू में आयोजित किया गया। कॉलेजों के भीतर और कैंपस हॉस्टलों में साउंड चेक के दौरान भजन बजाए गए।

महोत्सव की पुस्तिका में इसे कुलपति योगेश सिंह की परिकल्पना के अनुसार एक जीवंत साहित्यिक 'परंपरा' की शुरुआत बताया गया है।

लेकिन ठीक दस साल पहले यही फरवरी का महीना राजधानी के विश्वविद्यालयों में बिल्कुल अलग माहौल लिए हुए था। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) में एक विरोध सभा देखते-देखते गिरफ्तारियों और राष्ट्रीय स्तर के टकराव में बदल गई थी, एक ऐसा घटनाक्रम जिसने विश्वविद्यालयों और राज्य के रिश्ते को नए सिरे से परिभाषित कर दिया।

इसके बाद के सालों में कॉलेजों में दाख़िला लेने वाले छात्र कहते हैं कि उस दौर की छाया आज भी बनी हुई है। उनका कहना है कि असहमति ख़त्म नहीं हुई है, लेकिन अब हर विरोध को अनुशासनात्मक कार्रवाई, पुलिस की नज़र और अनिश्चित भविष्य के ख़तरे के साथ तौला जाता है।

विरोध और सज़ा

9 फरवरी 2016 को, वर्ष 2001 में संसद पर हमले के दोषी ठहराए गए कश्मीरी अलगाववादी मोहम्मद अफ़ज़ल गुरु को 2013 में फांसी दिए जाने के विरोध में जेएनयू में एक रैली आयोजित हुई, जिसके बाद कई छात्रों पर राजद्रोह के आरोप लगाए गए और उन्हें गिरफ्तार किया गया।

उस समय पुलिस ने आरोप लगाया था कि तत्कालीन जेएनयू छात्रसंघ अध्यक्ष कन्हैया कुमार ने अफ़ज़ल गुरु की याद में एक कार्यक्रम आयोजित किया था, जिसमें 'भारत-विरोधी नारे' लगाए गए। इसके बाद जेएनयू के छात्रों को 'राष्ट्र-विरोधी' (एंटी-नेशनल) करार दिया जाने लगा और कैंपस वैचारिक टकराव का मैदान बन गया।

फरवरी 2016 की गिरफ्तारियों के बाद के दिनों में भाजपा के वरिष्ठ नेताओं ने कैंपस में असहमति के मुद्दे को राष्ट्रीय पहचान के सवालों से जोड़ दिया था। तत्कालीन केंद्रीय वित्त मंत्री अरुण जेटली ने कहा था कि जेएनयू विवाद में सरकार ने 'वैचारिक जंग जीत ली है,' और यह संकेत दिया था कि आरोप झेलने वाले लोग भी अंततः देशभक्ति के नारे और तिरंगे को अपना रहे हैं।

वहीं तत्कालीन गृह मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा था कि ऐसे नारों के ज़रिये भारत की एकता और अखंडता पर सवाल उठाने वालों को बख्शा नहीं जाएगा। और इस तरह विरोध प्रदर्शनों को सीधे तौर पर राष्ट्रीय सुरक्षा से जोड़ दिया गया था।

विश्वविद्यालयों के शिक्षक याद करते हैं कि इसके बाद देश भर के परिसरों में प्रशासनों ने सार्वजनिक बैठकों, सुरक्षा इंतज़ामों और अनुशासनात्मक नियमों की दोबारा समीक्षा शुरू कर दी। वक्ताओं को बुलाने, कार्यक्रमों की अनुमति देने और प्रदर्शनों के प्रबंधन को अब प्रतिष्ठा और क़ानूनी जोखिम के चश्मे से देखा जाने लगा। यह केवल कोरी आशंका नहीं थी कि कैंपस में होने वाला कोई भी कार्यक्रम राष्ट्रीय विवाद में बदल जा सकता है।

इसका असर जल्द ही इस विश्वविद्यालय के दायरे से बाहर भी दिखने लगा। 2017 में दिल्ली विश्वविद्यालय के रामजस कॉलेज में आयोजित एक साहित्यिक सेमिनार उस समय विवादों में घिर गया, जब जेएनयू से जुड़े रहे उमर ख़ालिद और शेहला रशीद को आमंत्रित किया गया। एबीवीपी के विरोध के बाद कार्यक्रम रद्द कर दिया गया, कैंपस के बाहर झड़पें हुईं और मामला जल्द ही विश्वविद्यालयों में स्वीकार्य अभिव्यक्ति की सीमाओं पर राष्ट्रीय बहस में बदल गया।

कई छात्रों और शिक्षकों के लिए यह इस बात का संकेत था कि कोई शैक्षणिक कार्यक्रम कितनी तेज़ी से टकराव के मैदान में बदल सकता है।

2016 के बाद दाख़िला लेने वाले छात्रों का कहना है कि उन्होंने इस सतर्कता को सामान्य समझ की तरह अपनाया। वे बताते हैं कि अब रैलियों में हिस्सा लेने से पहले निगरानी, सोशल मीडिया पर नज़र और भविष्य की नौकरी को लेकर बातचीत होती है। सवाल यह नहीं रह गया कि बोलने की आज़ादी है या नहीं, बल्कि यह कि बढ़ते असहिष्णु राजनीतिक माहौल में एक युवा कितना जोखिम उठा सकता है।

आंदोलनों की बदलती रणनीति

पूर्व में प्रदर्शनों का हिस्सा रहीं जामिया मिल्लिया इस्लामिया की एक छात्रा ने 'द वायर' से कहा, 'हमें पीटा गया, एक महिला पुलिसकर्मी ने मुझे उन जगहों पर मारा, जहां किसी महिला को नहीं छुआ जाना चाहिए।'

2019 से देश के कई कैंपसों में टकरावों की एक ऐसी श्रृंखला देखने को मिली, जिसने हर अगले आंदोलन की दिशा तय की।

दिसंबर 2019 में जामिया कैंपस और सड़क के बीच की सीमा टूटती दिखी टीवी फुटेज और मोबाइल वीडियो में दिल्ली पुलिस के जवानों को विश्वविद्यालय के गेट से अंदर घुसते, आंसू गैस छोड़ते और इमारतों में प्रवेश करते देखा गया, जबकि छात्र जान बचाने के लिए भागते नज़र आए।

लाइब्रेरी के भीतर की तस्वीरें कुछ ही मिनटों में फैल गईं और कई दिनों तक दिखाई जाती रहीं, जिसमे छात्र मेज़ों के पीछे दुबके हुए थे और कुछ खून से सने चेहरों के साथ बाहर निकल रहे थ। विश्वविद्यालय के पास नागरिकता (संशोधन) अधिनियम/एनआरसी के ख़िलाफ़ प्रदर्शन कर रहे छात्रों को भी आंसू गैस से तितर-बितर किया गया। छात्रों और नागरिक अधिकार समूहों ने अत्यधिक बल प्रयोग और शैक्षणिक परिसरों में अवैध प्रवेश के आरोप लगाए, जबकि पुलिस का कहना था कि वह मुख्य सड़क से हटे प्रदर्शनकारियों का पीछा कर रही थी।

देश भर के लोगों के लिए इस घटना ने कैंपस की सुरक्षा को लेकर धारणाओं को बदल दिया। वहीं, इसे झेल चुके छात्रों के लिए यह एक स्थायी आघात बन गया। एक छात्र ने बताया कि वे क़ानून का पालन करने वाले नागरिक हैं, फिर भी पुलिस या रैपिड एक्शन फ़ोर्स की मौजूदगी उन्हें असहज कर देती है।

सीएए/एनआरसी विरोधी आंदोलन जल्द ही भाजपा सरकार की कल्पना से कहीं आगे बढ़ गया और देश के कई इलाकों व विश्वविद्यालयों में फैल गया। विश्वविद्यालयों के प्रोफेसरों का कहना है कि इतने बड़े पैमाने पर हुए विरोध प्रदर्शनों के बाद कुछ बदल गया। कैंपसों में सेंसरशिप बढ़ गई।

जावा में पुनर्जागृत शैव परंपरा: प्रम्बानन में इतिहास, अध्यात्म और वैश्विक सद्भाव का संगम

डॉ. शंभु पंवार

नई दिल्ली, 28 फरवरी। इंडोनेशिया के मध्य जावा स्थित विश्वविख्यात प्रम्बानन मंदिर परिसर में महाशिवरात्रि का पावन पर्व गहन श्रद्धा, सौंदर्य और अंतरराष्ट्रीय सहभागिता के साथ संपन्न हुआ। शताब्दियों बाद इस प्राचीन शिवालय के प्रांगण में इतना व्यापक और भावपूर्ण आयोजन हुआ, जिसने इतिहास और वर्तमान को एक ही आलोक में जोड़ दिया।

नौवीं शताब्दी (लगभग 850 ईस्वी) में मातरम (संजय) वंश के पराक्रमी शासक रकाई पिकातन के काल में आरंभ हुआ यह भव्य मंदिर दक्षिण-पूर्व एशिया का सबसे विशाल हिंदू मंदिर परिसर माना जाता है। त्रिमूर्ति—ब्रह्मा, विष्णु और शिव—को समर्पित इस समूह का केंद्रीय शिव मंदिर लगभग 47 मीटर ऊँचा है, जो जावानी स्थापत्य-कला की उत्कर्ष अभिव्यक्ति है। ऊर्ध्वमुखी शिखर, सूक्ष्म नक्काशी और रामायण के विस्तृत उत्कीर्ण दृश्य इसकी सांस्कृतिक गहराई के साक्ष्य हैं। लगभग 240 मंदिरों वाले इस समूह को 1991 में यूनेस्को ने विश्व धरोहर का दर्जा दिया था।

27 मई 2006 को आए 6.3 तीव्रता के विनाशकारी भूकंप में इंडोनेशिया में हजारों लोगों की मृत्यु हुई और लाखों प्रभावित हुए। इस आपदा से प्रम्बानन परिसर को भी गंभीर संरचनात्मक क्षति पहुँची, जिसके बाद संरक्षण और पुनरुद्धार कार्य कर इसे पुनः दर्शकों के लिए खोला गया। यह पुनर्स्थापन इंडोनेशिया की विरासत-निष्ठा का जीवंत उदाहरण है।

महाशिवरात्रि की रात्रि में 1008 दीपों का प्रज्वलन और भगवान शिव के 1008 नामों का सामूहिक जप वातावरण को दिव्य आभा से भर गया। शिव तांडव की मनोहारी प्रस्तुतियों और डमरू की नादमयी ध्वनि ने उपस्थित श्रद्धालुओं को भावलोक में पहुंचा दिया। 'महागंगा तीर्थ गमन' और 'अभिषेकम' अनुष्ठानों में 36 प्रांतों से लाए गए पवित्र जल के कलशों के साथ भारत की गंगा, नर्मदा और ब्रह्मपुत्र का जल भी सम्मिलित किया गया। लगभग 1000 मीटर लंबा इंडोनेशिया का राष्ट्रीय ध्वज शोभायात्रा का केंद्र बना—आस्था और राष्ट्रनिष्ठा का अनुपम संगम।

"टेंपल यूटिलाइजेशन वर्किंग टीम" के तत्वावधान में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन ने उत्सव को वैचारिक आयाम प्रदान किया। इंडोनेशिया के पर्यटन, संस्कृति और धार्मिक मंत्रालयों तथा इंडोनेशिया हिंदू परिषद के सहयोग से संपन्न इस सम्मेलन का आरंभ राष्ट्रगीत और वैदिक प्रार्थना से हुआ। जावा के कलाकारों की पारंपरिक नृत्य प्रस्तुतियों के पश्चात विभिन्न देशों से आए विद्वानों ने शिव-तत्त्व, अद्वैत चेतना और वैश्विक सद्भाव पर अपने विचार रखे। अमेरिका से पधारे भारतीय विद्वान डॉ. इंद्रजीत शर्मा ने विशेष व्याख्यान देकर भारत-इंडोनेशिया सांस्कृतिक सेतु को रेखांकित किया।

पंडित तिलक राज शर्मा स्मृति न्यास (संयुक्त राज्य अमेरिका) की ओर से 'विश्व शांति पुरस्कार' भी प्रदान किया गया। इंडोनेशिया के पर्यटन उपमंत्री नी लु एनिक एरमावती, संस्कृति उपमंत्री गिरिंग गणेश जुमारियो, जनसंख्या एवं परिवार विकास उपमंत्री रातु आयु इस्याना बागुस ओका तथा धार्मिक मंत्रालय के निदेशक डॉ. इ नेनगा दुइजा सहित अनेक गणमान्य अतिथि सम्मानित हुए। इंडोनेशिया में भारत के राजदूत श्री संदीप चक्रवर्ती ने भी अपनी सक्रिय उपस्थिति दर्ज कराई।

प्रम्बानन में महाशिवरात्रि का यह आयोजन केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि राजा रकाई पिकातन की ऐतिहासिक धरोहर में जीवित शैव परंपरा का पुनर्प्रकाश था—भारत और इंडोनेशिया की साझा सांस्कृतिक स्मृति का उज्ज्वल प्रमाण। 'बम बम भोले' की गूंज ने स्मरण कराया कि संस्कृति की जड़ें समय से परे होती हैं; वे महासागरों को पार कर महाद्वीपों को जोड़ती हैं और पीढ़ियों को प्रेरित करती हैं।

पत्र लेखक, कवि व साहित्यकार दिनेश तिवारी उपवन के जन्मदिन पर विशेष -

हिंदी साहित्य का नाम रोशन करते – दिनेश तिवारी उपवन

इन्दौर मध्यप्रदेश,

'दिनकर जब उदित होता है तो जो प्रकाश निकलता है। उससे ही वह किरणों में सकारात्मकता का वह प्रकाश पूरे आभामंडल में प्रज्वलित करता है। वहीं प्रतिक सूर्य जो ₹दिन का स्वामी₹ भी कहा जाता है। उसे दिनेश भी कहते हैं। आज हमारे पत्र लेखक मंच के प्रांतीय अध्यक्ष वरिष्ठ पत्र लेखक, कवि, और साहित्यकार श्री दिनेश तिवारी उपवन जी का आज 1 मार्च को जन्मदिन है। आप का भी व्यक्तित्व उसी सुर्य के समान है। बड़नगर मध्यप्रदेश में दिनेश तिवारी का जन्म हुआ था। जहां राष्ट्रीय कवि प्रदीप जी की भी जन्म हुआ था। दिनेश तिवारी उपवन जी भी अपने नाम के अनुसार लेखनी जब से थमी है, तब से एक साधक के रूप में निरंतर हिंदी भाषा की सेवा कर रहे हैं। आकाशवाणी, दूरदर्शन इन्दौर पर मंच संचालक के रूप में मधुर वाणी के जरिए प्रदेश में नाम रोशन कर रहे हैं। आप पत्र लेखक मंच प्रांतीय अध्यक्ष के साथ साथ विघोतमा साहित्य फाउंडेशन, गौतम शैक्षणिक परमार्थिक न्यास से भी आप जुड़ें हुए है। आप को साहित्य में लेखन के लिए स्टेट बैंक ऑफ इंडिया द्वारा पुरस्कृत भी किया गया है। गौतम महार्षि सम्मान साहित्य शिरोमणि सम्मान से भी आप विभूषित हैं। दिनेश तिवारी उपवन का लक्ष्य पीड़ित मानवता की सेवा है। आप सकारात्मकता से हर कार्य करने में हमेशा आगे रहते हैं। क्योंकि आप की सोच हमेशा से आशावादी ही रही। नईदुनिया अखबार में आप की शुरुआत पत्र लेखन से हुई थी और आज देशभर में आप लगभग 3000 से भी अधिक मंचों का कुशल संचालन इस बात का गवाह भी है। आप की वाणी को मां सरस्वती का आशीर्वाद है तभी तो आप का व्यक्तित्व जमीनी स्तर पर लोगों से मैत्रीपूर्ण है। उपवन जी ने राष्ट्रीय कवि प्रदीप जी, श्री कृष्ण सरल, चंद्रसेन विराट, सत्यनारायण सत्तन, डॉ शिवमंगल सुमन, प्रोफेसर सरोज कुमार आदि नामचीन कवियों के साथ आप ने भी कविता पाठ कर चुके हैं। दिनेश तिवारी उपवन को अपना पहला पुरस्कार राष्ट्रकवि श्री कृष्ण सरल जी के हाथों से मिला था। आप इसी तरह विभिन्न समाजिक व धार्मिक गतिविधियों के साथ साथ सतत लेखन में हिंदी साहित्य का नाम रोशन करते रहे। आप के जन्मदिन पर हम सभी पत्र लेखकों की और से आप को बहुत बहुत बधाई व शुभकामनाएं।

प्रेषक– स्वतंत्र लेखक – हरिहर सिंह चौहान जबरी बाग नसिया इन्दौर मध्य-प्रदेश

बेगानी शादी में मनु की पुरोहिताई

(आलेख : बादल सरोज)

दंगे, फसाद, उत्पात और भ्रष्टाचार के सारे रिकॉर्ड ध्वस्त करने के बाद अब गुजरात सरकार ने तय किया है कि वह शादी-विवाहों की पुरोहिताई का काम भी अपने हाथ में लेगी। इसकी शुरुआत उसने विवाह रजिस्ट्रेशन के कानून में बदलाव के साथ की है। मोदी जिसे अपना बताते हैं, उस गुजरात के उपमुख्यमंत्री हर्ष सिंघवी ने विधानसभा में बोला कि 'अनेक व्यक्तियों और सामाजिक संगठनों के ज्ञापन और सुझाव मिलने के बाद सरकार ने यह निर्णय लिया है कि अब रजिस्टर्ड विवाह करने वाले युगल को सहायक पंजीयक के यहाँ शपथपत्र देकर यह भी घोषित करना होगा कि उन्होंने अपनी शादी के बारे में अपने माता-पिता यानि अभिभावकों को बता दिया है।' इस प्रस्तावित कानून के तहत उन्हें अपने विवाह आवेदनों के साथ अपने माता-पिता के पते, आधार कार्ड नम्बर और संपर्क फोन नम्बर भी जमा करने होंगे। इसके बाद 10 दिन में सहायक रजिस्ट्रार इन अभिभावकों को सूचित करेगा और उसके बाद यदि वह 'संतुष्ट' हो जाता है, तो उसकी संतुष्टि के 30 दिन बाद शादी पंजीकृत की जायेगी।

बदलाव का यह गुजरात मॉडल अभी तक प्रचलित स्पेशल मैरिज एक्ट 1954 -- जो देश के सभी धर्मों, जातियों के नागरिकों के लिए एक ₹सिविल विवाह₹ का विकल्प प्रदान करता है – की भावना को पूरी तरह खत्म कर देने की बदनीयती से बढ़ा एक बड़ा कदम है। स्पेशल मैरिज एक्ट का यह कानून मुख्य रूप से लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष समाज बनाने और नागरिकों को व्यक्तिगत स्वतंत्रता देने के उद्देश्य से बनाया गया था। यह ऐसा क़ानून था, जिसकी मंशा समाज में अलग-अलग धर्मों या जातियों के बीच होने वाले विवाहों को प्रोत्साहन देने, उसे कानूनी मान्यता प्रदान करने की थी, ताकि धीरे-धीरे सामाजिक भेदभाव कम हो सके। पूरे देश में इस तरह के कई विवाहों के लिए कुछ लाख रुपयों की नकद प्रोत्साहन राशि, नौकरियों में प्राथमिकता जैसे प्रावधान तक किये गए थे। यह उन जोड़ों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है, जो बिना धर्म बदले या बिना किसी धार्मिक रीति-रिवाज के शादी करना चाहते हैं। यह कानून हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन और बौद्ध सहित सभी धर्मों और किसी भी धर्म को न मानने वाले लोगों पर लागू होता है। मुस्लिम या हिंदू विवाह कानून जैसे पर्सनल लॉ के तहत अक्सर शादी के लिए एक साथी को अपना धर्म बदलना पड़ता था। यह एक्ट बिना धर्म बदले शादी का विकल्प देता है। इसी के साथ इस तरह शादी करने वाले जोड़ों को संपत्ति, विरासत और तलाक जैसे मामलों में ऐसा एक समान कानूनी ढांचा और सुरक्षा प्रदान करता है, जो किसी धार्मिक ग्रंथ के बजाय देश के संविधान पर आधारित होता है। इस कानून के माध्यम से यह भी सुनिश्चित किया जाता है कि शादी करने वाला व्यक्ति पहले से विवाहित न हो, जिससे धोखाधड़ी और बहुविवाह की संभावना भी कम हो जाती है। अभी तक इसकी प्रक्रिया आसान है। शादी करने के इच्छुक जोड़े को अपने जिले के ₹विवाह अधिकारी₹ को लिखित नोटिस देना होता है। नोटिस मिलने के बाद अधिकारी इसे अपने नोटिस बोर्ड पर चस्पा कर सार्वजनिक करता है। अगले 30 दिनों तक किसी भी व्यक्ति को इस विवाह पर कानूनी आपत्ति, जैसे पहले से शादीशुदा होना दर्ज करने का अधिकार होता है। यदि कोई वैध आपत्ति नहीं आती है, तो तीन गवाहों की उपस्थिति में विवाह अधिकारी के सामने शादी संपन्न होती है और मैरिज सर्टिफिकेट जारी कर दिया जाता है।

देश के वयस्क नागरिकों के निजी जीवन में हस्तक्षेप और जीवन साथी चुनने के उनके संवैधानिक अधिकार को सीमित और लगभग असंभव बनाने वाले इस संशोधन के लिए 'लव जिहाद' का घिसा-पिटा, विभाजनकारी और निराधार बहाना बनाया गया हैं। ध्यान रहे कि खुद मोदी सरकार संसद और सूचना के अधिकार में दिए गए जवाब तथा सुप्रीम कोर्ट में दिए हलफनामे में मान चुकी है कि लव जिहाद जैसी कोई चीज अस्तित्व में नहीं है। मगर कुनबा जानता है कि उसने समाज के भीतर अपने दुष्प्रचार के जरिये काफी हद तक इस तरह का माहौल बना लिया है कि ज़रा-सा मुस्लिम एंगल देकर लोकतंत्र और संविधान के किसी भी निषेध को गले उतारा जा सकता है।

हाल के कुछ वर्षों में छेड़े गए धुर साम्प्रदायिक अभियान में सिर्फ आरएसएस ही नहीं जुटा, प्रधानमंत्री मोदी, उनके मंत्रिमंडल के मंत्रियो और भाजपा मुख्यमंत्रियों सहित प्रशासन, यहाँ तक कि इस विचारधारा से संबद्ध न्यायपालिका में विराजे 'सज्जनों' ने भी बढ़-चढ़कर योगदान दिया। मुंह में सबका साथ सबका विकास रहा, बगल में आबादी के अलग-अलग हिस्सों को एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा करने और लड़वाने का छुरा रहा। कभी श्मशान बनाम कब्रिस्तान, कभी होली बनाम ईद, कभी कपड़ों से की जाने वाली पहचान, तो कभी सब्जी ठेलों से लेकर दुकानों तक नाम लिखवाकर, उसे बहिष्करण का जरिया बनाया गया। इस तरह देश की हजारों वर्ष पुरानी सहजीवन और साझी संस्कृति को छिन्न-भिन्न तथा नष्ट-भ्रष्ट करने की कोशिशें की गयीं। बिना किसी तरह के आंकड़े बताये कुछ दशकों में हिन्दू आबादी के अल्पमत में चले जाने का खतरा बताकर भाजपा शासित राज्यों में धर्म परिवर्तन वाले कानूनों की झड़ी लगा दी गयी। इस नफरती मुहिम ने आज देश को कहाँ लाकर खड़ा करदियाहै, इसकी ताज़ी मिसाल बदायूं का बताया जानेवाला वह विडियो है, जिसमें नमाज से लौट रहे एक वृद्ध सहित मुस्लिम पहनावे वाले व्यक्तियों के साथ खुद को बजरंग दल का अध्यक्ष बताने वाला गुंडा गाली-गलौज और मारपीट कर रहा है। एक और चिंताजनक विडियो है, जिसमे स्कूल बस में वापस लौट रही छोटी-छोटी बच्चियां अपनी ही सहपाठी एक मुस्लिम बच्ची के बारे में अनर्गल बोल रहीहैं। यह आपराधिक ध्रुवीकरण कितना नीचे तक जा चुका है, इसका एक उदाहरण सर्वोच्च न्यायालय के जज जस्टिस उज्ज्वल भुइयाँ ने दिया, जब उन्होंने बताया कि किस तरह मुसलमान जैसा लगने वाला नाम होने की वजह से एक पीएचडी छात्रा को मकान देने से साफ़ मना कर दिया गया। यह कही दूरदराज नहीं, राजधानी दिल्ली का विस्तार कहे जाने वाले नोयडा में हुआ।

कुनबा जानता है कि एक बार 'हिन्दू खतरे में' का जुमला चेप कर कुछ भी टेपा जा सकता है। इसलिए गुजरात सरकार ने इस संशोधन के साथ वही आजमाने की कोशिश की है। मगर मसला लव जिहाद नहीं है, इरादा लोकतंत्र के तिरस्कार, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की नींव पर खड़े सभ्य समाज के ढाँचे के नकार और संविधान के धिक्कार का है। अब तक के हासिल के उस संहार का है, जिसे कुनबा मध्ययुगीन समाज में लौटने का 'धर्मयुद्ध' कहता बताता है। असल मकसद मुसलमानों या ईसाईयों, सिखों या बौद्धों का नहीं है, उस ब्राह्मण धर्म की बहाली का है, जिसके आधार पर राष्ट्र बनाना और चलाना संघ अपना लक्ष्य और ध्येय मानता है। हाल में यूजीसी के नए नियमों के खिलाफ मचाये उत्पात ने, जिसे हिन्दू कहा जाता है, उस आबादी के उस विराट बहुमत को उसकी 'हैसियत' दिखाने में अपनी पूरी ताकत झोंक देने वालों ने इसी 'ब्राह्मण धर्म' की दुहाई दी थी। अब वे बेगानी शादी में बिन बुलाये ही पुरोहिताई करके महिलाओं को मनु की अंधेरी कंदरा में धकेल देना चाहते हैं।

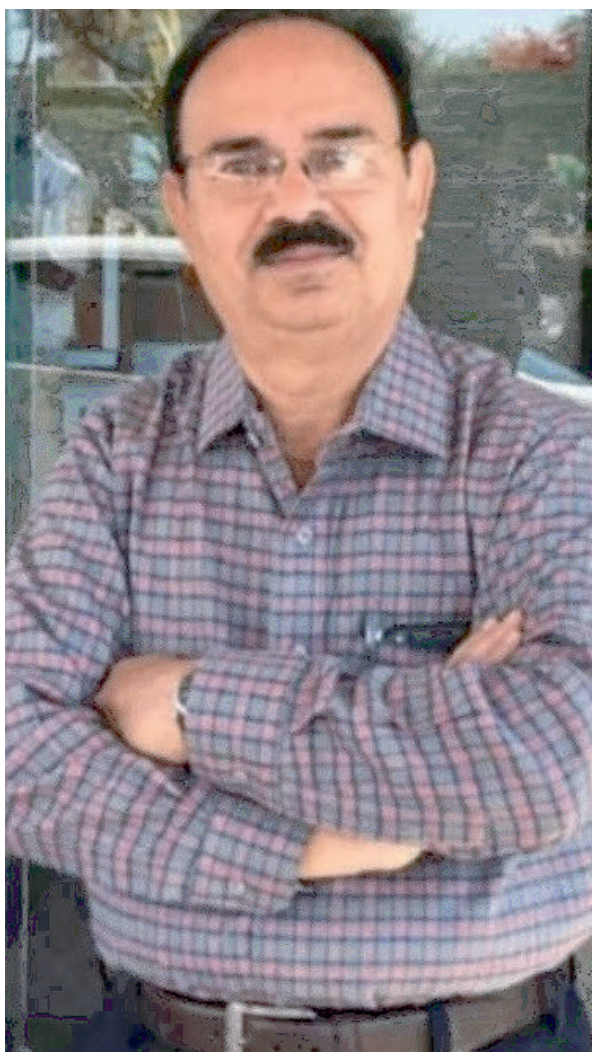

गुजरात क़ानून बनाकर ऐसा करना चाहता है, तो यूपी में योगी की सरकार बिना कानून बनाये ही युगल दम्पत्तियों का जीना मुहाल किये हुए है। बारह अंतर्धार्मिक जोड़ों – जिनमे 7 में युवती मुस्लिम और युवक हिंदू, 5 में युवती हिन्दू और युवक मुस्लिम समुदाय से थे – के मामले में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने योगी सरकार को आईना दिखाया है। इन बारहों मामलों में किसी ने भी धर्म नहीं बदला था, इसके बावजूद सरकार उन्हें धर्म परिवर्तन कनून के नाम पर परेशान कर रही थी। हाईकोर्ट ने साफ किया कि इस देश में वयस्कों को विवाह करने, साथ रहने का अधिकार है, किसी व्यक्ति, परिवार या सरकार को उसमे टांग अड़ाने का अधिकार नहीं है। ऐसा किया जाना देश की विविधता के लिए खतरनाक होगा। राज्य का कर्तव्य है कि वह उनके जीवन और स्वतन्त्रता के अधिकार की हिफाजत करे। अदालत के हस्तक्षेप से भले यह रुक गया हो, मगर इससे संघ और भाजपा की मंशा उजागर हो जाती है।

विवाह और अपना अच्छा जीवन साथी चुनने तथा बुरे जीवन साथी से मुक्ति पाने के प्रश्नों पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और इस पूरे विचार समूह की समझदारी क्या है, इसके लिए डॉ आंबेडकर द्वारा लाये गए हिन्दू कोड बिल पर इनके रुख पर निगाह डालना जरूरी है। डॉक्टर भीमराव आंबेडकर ने 11 अप्रैल 1947 को संविधान सभा के सामने हिंदू कोड बिल पेश किया। यह बिल हिंदू महिलाओं को तलाक का अधिकार, संपत्ति में उत्तराधिकार और अंतर्जातीय विवाह जैसे कानूनी अधिकार देने के प्रावधान करता था। इस तरह ऐसी तमाम कुरीतियों को दूर करना चाहता था, जिन्हें अपनी महान धार्मिक परंपरा के नाम पर कुछ कट्टरपंथी जिंदा रखना चाहते थे। जैसे ही इस क़ानून का मसौदा रखा गया, वैसे ही आरएसएस, सावरकर की अगुआई वाली हिन्दू महासभा और ऐसे ही कुछ संगठन इसके खिलाफ कपड़े फाड़ने पर आमादा हो गए। इसे हिंदू समाज की 'धर्मसम्मत' सामाजिक संरचना और कानूनों में राज्य का हस्तक्षेप बताने लगे। तत्कालीन सरसंघचालक एमएस गोलवलकर ने अगस्त 1949 के अपने एक भाषण में कहा कि 'आंबेडकर जिन सुधारों की बात कर रहे हैं, वे भारतीयता से बहुत दूर हैं। इस देश में विवाह और तलाक जैसे सवाल अमेरिकी या ब्रिटिश मॉडल से नहीं सुलझेंगे। हिंदू संस्कृति और कानून के अनुसार, विवाह एक ऐसा संस्कार है, जिसे मृत्यु के बाद भी बदला नहीं जा सकता।' आरएसएस के मुखपत्र 'ऑर्गनाइज़र' में इसे ₹हिंदू कानून, संस्कृति और धर्म पर एक क्रूर और अज्ञानी आक्षेप₹ कहा। ये सब मिल-मिलाकर आन्दोलन में उतर गए। दिसंबर 1949 में आरएसएस ने दिल्ली के रामलीला मैदान में एक विरोध सभा की गयी, जिसमें इस हिन्दू कोड बिल को ₹हिंदू समाज पर परमाणु बम₹ और 'रोलेट एक्ट' तक बताया गया। इसके बाद संघ स्वयंसेवकों ने संसद पर प्रदर्शन किया और नेहरू-अंबेडकर के पुतले जलाए।

संगम विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों का रणथंभौर, में शैक्षणिक भौगोलिक भ्रमण

अनूप कुमार शर्मा परिवहन विशेष

संगम विश्वविद्यालय, भीलवाड़ा के कला एवं मानविकी संकाय के स्नातक विद्यार्थियों को सवाई

माधोपुर स्थित रणथंभौर नेशनल पार्क एवं यूनेस्को विश्व विरासत स्थलों में सूचित रणथंभौर दुर्ग का भौगोलिक

भ्रमण दिनांक 26 एवं 27 फरवरी 2026 को करवाया गया।भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों को रणथंभौर नेशनल पार्क के वन्यजीवों को निकट से देखने एवं उनके

व्यवहार का अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ। विद्यार्थियों ने वन, वन्य जीव संपदा एवं जल संग्रहण इकाइयों

को संरक्षित करने के संबन्ध में वन कर्मियों से ज्ञानार्जन किया। विद्यार्थियों ने पर्यटकों एवं वन्यजीवों तथा

पर्यटकों एवं विरासत स्थलों के संबन्ध तथा पर्यटन से जुड़े रोजगार एवं स्वरोजगार के संबन्ध में व्यावहारिक

जानकारी प्राप्त की। इस दौरान भूगोल विभाग के सहायक आचार्य डॉ० अभिषेक श्रीवास्तव ने स्थानीय

जैव-विविधता को बनाए रखने हेतु छात्र-छात्राओं को व्यावहारिक उपाय सुझाए। विद्यार्थियों को जैव-विविधता

संरक्षण की तकनीकों एवं जीवाश्मों के अनुभवमूलक अध्ययन हेतु राजीव गांधी क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान

संग्रहालय का भी भ्रमण करवाया गया।

रणथंभौर दुर्ग में विद्यार्थियों ने बत्तीस खंभों की छतरी, त्रिनेत्र गणेश मंदिर, हम्मीर महल, सुपारी

महल, पद्मला तालाब, अन्नपूर्णा मंदिर सहित अन्य विरासत स्थलों के दर्शन किए। इस दौरान हिन्दी विभाग की

सह आचार्य डॉ० निर्मला राव द्वारा विद्यार्थियों को दुर्ग निर्माण की वास्तुकला के संबंध में जानकारी प्रदान की

गई।

विद्यार्थियों को भौगोलिक भ्रमण के दौरान मार्ग में पड़ने वाले टोंक में स्थित पुरातत्व स्थल हाथी भाटा

एवं जहाजपुर में स्थित जैन मंदिर का भ्रमण करवाया गया।

कला एवं मानविकी विभाग के डीन प्रो० (डॉ०) राजीव मेहता एवं डिप्टी डीन डॉ० जोरावर सिंह

द्वारा भौगोलिक भ्रमण कार्यक्रम की सफलता पर संकाय सदस्यों एवं विद्यार्थियों को बधाई दी गई। भौगोलिक

भ्रमण कार्यक्रम को योजनानुसार सफलता प्रदान कराने हेतु संगम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० (डॉ०)

करुणेश सक्सेना, प्रति कुलपति प्रो० (डॉ०) मानस रंजन पाणिग्रही एवं कुलसचिव डॉ० आलोक कुमार द्वारा

कला एवं मानविकी संकाय को धन्यवाद एवं शुभकामनाएं प्रेषित की गईं।

हेमन्त सोरेन से युवा शतरंज खिलाड़ी अधिराज मित्रा ने की मुलाकात

अंडर 14 राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक विजेता हैं अधिराज, मुख्यमंत्री पुत्र ने मुंह मीठा कराया

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची , मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन से आज कांके रोड रांची स्थित मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में राष्ट्र मंडल शतरंज चैंपियनशिप 2025 में (अंडर-14) स्वर्ण पदक विजेता खिलाड़ी अधिराज मित्रा ने मुलाकात की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री के समक्ष जमशेदपुर के युवा शतरंज खिलाड़ी अधिराज मित्रा ने 07 से 16 नवंबर 2025 तक मलेशिया में आयोजित हुए राष्ट्र मंडल शतरंज प्रतिस्पर्धा के अनुभव साझा किए। उन्होंने बताया कि इस

प्रतियोगिता में राष्ट्र मंडल देशों के कई शीर्ष खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया था।

मुख्यमंत्री को अधिराज मित्रा ने अवगत कराया कि वे लोयला स्कूल जमशेदपुर में 8वीं कक्षा के छात्र हैं। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने अधिराज मित्रा को अपनी ओर से हार्दिक बधाई दी। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारे राज्य के खिलाड़ियों में खेल के प्रति जज्बा और प्रतिभा सराहनीय रहा है। झारखंड के खिलाड़ियों ने विभिन्न खेलों की राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में अपने प्रदर्शन का लोहा मनवाते हुए राज्य का नाम रोशन कर दिखाया है। मुख्यमंत्री ने युवा शतरंज खिलाड़ी अधिराज मित्रा के उज्जवल भविष्य हेतु शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर अधिराज मित्रा की माता रुना मित्रा, पिता उत्तम मित्रा एवं कोच अभिषेक दास उपस्थित थे।

दिल्ली टैक्सी एंड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के नेतृत्व में जंतर–मंतर पर एक भारी धरना–प्रदर्शन आयोजित किया गया

परिवहन विशेष न्यूज

संजय सम्राट ने कहा —

"हमारी माँगें वर्षों से अनदेखी की जा रही हैं। यदि अब भी केंद्र और राज्य सरकारें — विशेषकर परिवहन मंत्रालय — हमारी बातों को नहीं मानतीं, तो आने वाले दिनों में हमारे सभी ड्राइवर अपनी बाहों पर काली पट्टी बाँधकर गाड़ियाँ चलाएँगे। यह हमारे शांतिपूर्ण विरोध का प्रतीक होगा।"

उन्होंने आगे कहा —

"हम अपने हर यात्री — देशी या विदेशी — को अपनी समस्याओं से अवगत कराएँगे ताकि जनता भी समझ सके कि टैक्सी और ट्रांसपोर्ट सेक्टर किन कठिनाइयों से गुजर रहा है। हमारी माँगों का ज्ञापन पहले ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह और परिवहन मंत्री नितिन गडकरी को सौंपा जा चुका है। लेकिन यदि जल्द समाधान नहीं हुआ, तो हम अपनी शिकायतें अब 'भगवान' को सौंपेंगे।"

भगवान से प्रार्थना का नया चरण

संजय सम्राट ने बताया कि संगठन आने वाले दिनों में एक पत्र राम मंदिर में और दूसरा पत्र हनुमान मंदिर में भी देगा।

"अब लगता है कि कोई नेता, मंत्री या प्रधानमंत्री हमारी नहीं सुन रहे। इसलिए हम भगवान से प्रार्थना करेंगे कि वे हमारे देश के मंत्रियों को सद्बुद्धि दें, ताकि वे परिवहन सेक्टर की सच्ची समस्याओं को समझें और समाधान करें।"

मुख्य माँगें / मुद्दे संक्षेप में:

1 बाइक टैक्सी पर रोक:

प्राइवेट नंबर वाली बाइक टैक्सियाँ बिना बीमा व पुलिस वेरिफिकेशन के चल रही हैं — इससे यात्रियों की सुरक्षा और टैक्सी ड्राइवरों की रोज़ी पर खतरा है।

2 ऐप–बेस्ड टैक्सी का किराया तय हो:

कंपनियाँ 10 साल से किराया नहीं बढ़ा रहीं, जबकि कमीशन बढ़ा दिया गया है। ड्राइवरों की सुरक्षा और जिम्मेदारी तय की जाए।

3 पैनिक बटन / VLTD भ्रष्टाचार बंद हो:

तकनीकी रूप से विफल सिस्टम के नाम पर 10,000–20,000 तक की वसूली हो रही है। अनिवार्यता समाप्त की जाए।

4 बस बॉडी कोड (AIS–153) में छूट:

पहले से बनी बसों पर नया कोड लागू करना अनुचित है।

5 स्पीड लिमिट डिवाइस की बाध्यता समाप्त हो:

ऑल इंडिया परमिट वाहनों के लिए 80 किमी सीमा अनुचित है।

6 ई–वाहन नीति पर पुनर्विचार:

बिना चार्जिंग सुविधा व दिशा–निर्देश के EV नीति थोपना छोटे ऑपरेटरों पर अन्याय है।

7 60 दिन में राज्य वापसी आदेश रद्द हो:

ऑल इंडिया परमिट वाले वाहन पहले ही टैक्स भरते हैं, यह शर्त अनुचित है।

8 E–चालान और ब्लैकलिस्टिंग बंद हो:

बोगस चालान से ड्राइवरों की आजीविका प्रभावित हो रही है।

9 राजस्थान में कैरियर चालान बंद हों:

पर्यटक वाहनों के लगेज कैरियर पर कार्रवाई अनुचित है।

उत्तर प्रदेश टैक्स नीति में सुधार:

15 साल का एकमुश्त टैक्स अन्यायपूर्ण है।

11 CAQM प्रतिबंध वापस हो:

BS-IV डीज़ल वाहनों को पंजीकरण अवधि तक चलाने की अनुमति दी जाए।

12 उत्तराखंड चारधाम नीति में संशोधन:

15 दिन की सीमा हटाकर 6 महीने की अनुमति दी जाए।

13 HSRP घोटाले की जाँच:

200 की प्लेट पर 1000 वसूली — फिटनेस/परमिट रोकना बंद किया जाए।

14 दिल्ली में MCD टोल टैक्स समाप्त:

पहले से टैक्स देने के बाद यह दोहरी वसूली है।

15 राज्य टैक्स पोर्टल सुधार:

तकनीकी खामियों और अधिकारियों की मनमानी रोकी जाए।

संजय सम्राट ने कहा —

"हम किसी राजनीतिक दल से नहीं, बल्कि अपने अधिकारों से जुड़े हैं। अगर सरकारें समाधान नहीं करतीं, तो यह आंदोलन देश–व्यापी रूप लेगा।"

भवदीय,
(संजय सम्राट)
अध्यक्ष — दिल्ली टैक्सी एंड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन
(Regd.)

राउरकेला में सरस स्वदेशी मेला का शुभारंभ, स्वदेशी उत्पाद अपनाने का आह्वान

अग्निशमन विभाग के अनापत्ती पत्र पर सवाल, जाँच हो – डॉ यादव

राउरकेला, 27 फरवरी : राउरकेला के सेक्टर-13 स्थित मेला मैदान में शुक्रवार को सुंदरगढ़ जिला प्रशासन एवं ओडिशा सरकार के पंचायती राज एवं पेयजल विभाग के अंतर्गत कार्यरत ओआरएमएएस (ORMAS) के संयुक्त तत्वावधान में सरस स्वदेशी मेला का शुभारंभ हुआ। यह मेला 9 मार्च तक चलेगा।

ओडिशा विधानसभा के उपाध्यक्ष भवानी शंकर भोई ने मुख्य अतिथि के रूप में मेले का उद्घाटन किया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि स्वदेशी केवल एक आंदोलन नहीं, बल्कि सामूहिक कार्रवाई का आह्वान है। "स्वदेशी उत्पादों की खरीद और उपयोग से हम सीधे तौर पर ग्रामीण कारीगरों और उद्यमियों की आजीविका को सशक्त बनाते हैं," उन्होंने कहा और नागरिकों से स्थानीय उत्पादकों का सक्रिय समर्थन करने की अपील की।

वहीं अग्निशमन विभाग द्वारा फायर लाइसेंस पर गोलमोल जवाब असीस्टेंट अफ़सर फायर ऑफिस राउरकेला ने कहा ₹हमने अनुशंसा प्रदान की है -लाइसेंस नहीं दिया कारण उन्होंने फायर लाइसेंस के लिए निवेदन प्रस्तुत नहीं किया ₹

इस विषय पर सामाजिक कार्यकर्ता व आरटीआई एक्टिविस्ट डॉक्टर राजकुमार यादव ने मामले की गंभीरता को देखते हुए जांच की मांग की है उन्होंने कहां जहां लाखों की संख्या में लोगों का आगमन होता है वहां इस तरह से आदमी संबंध विभाग के द्वारा उचित व्यवस्था किए बिना ही ऐसे आयोजनों पर तुरंत रोक लगानी चाहिए वह संलग्न कर्मचारियों अधिकारियों व व्यवसाइयों पर कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए₹

केंद्रीय जनजातीय कार्य मंत्री जुएल उरांव ने वर्चुअल माध्यम से कार्यक्रम में भाग लेते हुए मेले की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं दीं।

रघुनाथपाली विधायक दुर्गा चरण तांती ने अपने संबोधन में आशा व्यक्त की कि शहरवासी मेले में अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर स्वदेशी उत्पादों को समर्थन देंगे। उन्होंने कहा कि स्वदेशी वस्तुओं को अपनाना आत्मनिर्भर भारत के विजन को सशक्त करेगा।

इस अवसर पर स्वदेश जागरण मंच के राज्य संयोजक रमाकांत पात्रा, सुंदरगढ़ कलेक्टर डॉ. शुभंकर महापात्र, राउरकेला अतिरिक्त जिला दंडाधिकारी सह नगर निगम आयुक्त दीना दस्तगीर, आईएएस प्रोबेशनर फाबी राशिद, जिला परिषद के मुख्य विकास अधिकारी सह कार्यपालक अधिकारी सुरंजन साहू तथा पानपोष उपजिलाधिकारी विजय नायक सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे। सुरंजन साहू ने स्वागत भाषण दिया, जबकि विजय नायक ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।

मेले में ओडिशा के विभिन्न जिलों से आए 127 स्टॉल तथा अन्य राज्यों के 48 स्टॉल लगाए गए हैं। इसके अलावा स्वदेश जागरण मंच द्वारा 150 स्टॉल स्थापित किए गए हैं, जिनमें स्वदेशी उत्पादों, हस्तशिल्प और ग्रामीण उद्यमों की व्यापक प्रदर्शनी की गई है।

ब्लैक लिस्टेड ईगल कंस्ट्रक्शन को 500 करोड़ का काम कैसे मिला?

गाड़ी मज़दूर 9 दिनों से बिना काम के घर बैठे हैं। उनके पास अपना परिवार चलाने के लिए पैसे नहीं हैं। लेकिन ओडिया माइनॉरिटी का शोषण करके पहली बार आई सरकार ने ओडिया कॉन्ट्रैक्टरों को कैसे परेशान किया जाए और उनसे करोड़ों रुपये रिश्वत में कैसे वसूले जाएं, इसका रास्ता पहले ही बना दिया है। सरकार की ऐसी हरकतों का विरोध करते हुए, प्रदेश कांग्रेस के सीनियर प्रवक्ता श्री रजनी कुमार मोहंती ने आज प्रदेश कांग्रेस ऑफिस में हुई प्रेस कॉन्फ्रेंस में रिपोर्टर्स को बताया कि पिछली सरकार के समय टेंडर बिडिंग प्रोसेस में कॉन्ट्रैक्टर्स के लिए किसी भी कॉन्ट्रैक्ट वर्क के लिए अनुमानित कीमत से 14.99 परसेंट कम बोली लगाने का नियम था। लेकi

मजबूत व ईमानदार नेतृत्व का संकल्प: अधिवक्ता सुनीता कल्सन

चण्डीगढः अधिवक्ता सुनीता कल्सन ने बार काउंसिल पंजाब एवं हरियाणा के सदस्य पद के लिए चुनाव मैदान में उतरते हुए अधिवक्ता बिरादरी से व्यापक समर्थन की अपील की है। चुनाव में उनका क्रमांक 135 निर्धारित किया गया है।

उन्होंने 17 व 18 मार्च 2026 को होने वाले मतदान में सभी अधिवक्ताओं से प्रथम वरीयता मत देने का आग्रह करते हुए कहा कि उक्त चुनाव केवल एक पद का नहीं, बल्कि भविष्य में अधिवक्ताओं के मान-सम्मान, अधिकारों और दिशा तय करने का अवसर है। उल्लेखनीय है कि अधिवक्ता डोर-टू-डोर कोर्ट परिसरों में चुनावों संबंधी अधिवक्ताओं से समर्थन प्राप्त करने के लिए पहुंची थीं।

उन्होंने चुनाव प्रचार अभियान के दौरान कहा कि उनका उद्देश्य बार काउंसिल में एक सशक्त, पारदर्शी और जवाबदेह नेतृत्व स्थापित करना है।

उन्होंने कहा कि आज वकालत पेशा अनेक चुनौतियों से गुजर रहा है। युवा अधिवक्ताओं को पर्याप्त अवसर नहीं मिल पा रहे हैं और कई बार प्रशासनिक स्तर पर भी अधिवक्ताओं की समस्याओं को प्राथमिकता नहीं मिलती।

उन्होंने कहा कि यदि उन्हें सेवा का अवसर मिला तो वह अधिवक्ताओं के हितों की रक्षा के लिए हर संभव प्रयास करेगी, जहां प्रत्येक अधिवक्ता की आवाज सुनी जाए।

उन्होंने कहा कि नए अधिवक्ताओं को प्रारंभिक तौर से अनेकों कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिनके समाधान के लिए ठोस नीतियों की आवश्यकता है। उन्होंने नए अधिवक्ताओं को प्रशिक्षण, मार्गदर्शन और आर्थिक सुरक्षा के मुद्दों को प्राथमिकता देने की बात कही।

उन्होंने महिला अधिवक्ताओं की सुरक्षा, सम्मान और कार्यस्थल पर समान अवसर सुनिश्चित करने और बार काउंसिल में महिला प्रतिनिधित्व मजबूत होना समय की मांग है।

उन्होंने कहा कि बार काउंसिल पंजाब एवं हरियाणा के चुनाव 17 और 18 मार्च को आयोजित किए जाएंगे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023